

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### मध्यकालीन इतिहास

#### कन्नौज के गहड़वाल

इस वंश के संस्थापक चन्द्रदेव थे, जिन्होंने अपनी दूसरी राजधानी वाराणसी को बनाया। इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गोविंदचन्द्र हुआ। जिसने सोने के सिक्के जारी किये उसने विविध विद्या वाचस्पति की उपाधि धारण की। उसका मंत्री लक्ष्मीधर ने व्याकरण की प्रसिद्ध पुस्तक कल्पद्रुम की रचना की। इस वंश का अंतिम शासक जयचन्द्र था। जिसने चाहमान शासक पृथ्वीराज तृतीय से युद्ध किया। वह मुहम्मद गौरी द्वारा 1194 ई. में चंदावर के युद्ध में मारा गया।

परमर्दिदेव (शासनकाल 1165—1203) कालिंजर तथा महोबा के शासक थे, इन्हें राजा परमाल भी कहा जाता है। जगनिक इन्हीं के दरबारी कवि थे जिन्होंने परमाल रासो की रचना की थी। परमाल रासो में राजा परमाल के यश और वीरता का वर्णन वीरगाथात्मक रासो काव्य शैली में किया गया है। वर्तमान समय में इसके उपलब्ध हिस्से 'आल्ह खंड' में राजा परमाल के ही दो दरबारी वीरों की वीरता का वर्णन मिलता है।

#### महोबा के राजा परमर्दिदेव या परमाल

महोबा के राजा परमर्दिदेव या परमाल का नाम समस्त उत्तर भारत में विख्यात है। सन् 1165 के लगभग सिंहासन पर बैठने के समय इसकी उम्र अधिक न रही होगी किंतु इसने राज्य को अच्छी तरह संभाला। इसके दो प्रतिद्वंदी थे, एक तो काशी और कन्नौज के राजा जयचंद्र गहड़वाल और दूसरा दिल्ली तथा अजमेर का शासक पृथ्वीराज चौहान।

परमर्दिदेव ने जयचंद्र से मित्रता की और पृथ्वीराज से संघर्ष। पृथ्वीराजरासो तथा आल्हाखंड के वर्णनों से यह निश्चित है कि चौहानों और चंदेलों का यह संघर्ष कुछ वर्षों तक चलता रहा और इसमें दोनों पक्षों की पर्याप्त हानि हुई। परमर्दिदेव के मुख्य सामंतों में से बनावर बंधु ऊदल और मलखान मारे गए और चंदेल राज्य के बहुत से भाग पर पृथ्वीराज का अधिकार हो गया। शिलालेखों से इन घटनाओं पर विशेष प्रकाश नहीं पड़ता, किंतु मदनपुर के शिलालेखों से इतना निश्चित है कि पृथ्वीराज ने महोबा के आसपास के प्रदेश को सन् 1182 में बुरी तरह से लूटा। परमर्दिदेव की हार इतनी जबरदस्त हुई थी कि कुछ कवियों ने तो यहाँ तक कह डाला कि परमर्दि ने मुँह में घास लेकर पृथ्वीराज से अपने प्राण बचाए। किंतु एक आफत टली तो दूसरी आई। सन् 1192 में चौहान राज्य और सन् 1194 में गहड़वाल राज्य का मुहम्मद गौरी ने अंत कर दिया और भारत में कुतबुद्दीन को अपना प्रतिनिधि बनाया। सन् 1202 में कुतबुद्दीन ने कई अन्य अमीरों का साथ लेकर कालिंजर पर आक्रमण किया। परमर्दिदेव ने कुछ समय तक घेरे में रहते हुए युद्ध किया किंतु अंत में उसने अपनी पराजय स्वीकार की और कर रूप में बहुत से हाथी तथा घोड़े कुतबुद्दीन को देने की बात तय हुई। भाग्यवश इसी समय परमर्दिदेव की मृत्यु हो गई। इसके प्रधानामात्य ने कुछ समय तक मुसलमानों का और सामना किया किंतु दुर्ग में पानी की कमी पड़ने पर उसने भी आत्मसमर्पण कर दिया। परमर्दिदेव शिव का भक्त और अच्छा कवि था। संभवतः वह अच्छा राजनीतिज्ञ रहा होगा; किंतु यदि हम परंपरागत कथाओं पर विश्वास करें तो यह कहना पड़ेगा कि साहस की कमी उसका मुख्य दोष था।

#### चाहमान वंश/शाकम्भरी के चौहान

वसुदेव चाहमान वंश का संस्थापक था। उसने अजमेर को अपनी राजधानी बनाया। विग्रहराज द्वितीय इस वंश का प्रथम प्रसिद्ध शासक हुआ। उसने आशापुरी देवी का मंदिर दीर्घकक्ष में (असम) में बनवाया। पृथ्वीराज तृतीय वंश का द्वितीय शक्तिशाली शासक था। मुस्लिम लेखकों ने इसे रायपिथौड़ा के नाम से पुकारा है। उसने जयचन्द्र की पुत्री संयोगिता से विवाह किया। 1191 में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान पर आक्रमण किया। पृथ्वीराज चौहान ने उसे पराजित कर दिया। इस युद्ध को तराइन का प्रथम युद्ध कहते हैं। 1192 में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज पर पुनः आक्रमण किया। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की पराजय हुई तथा दिल्ली और अजमेर की

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

अरबों के बाद भारत में तुर्कों का आगमन हुआ। तुर्क मूलतः तुर्किस्तान अफगानिस्तान ईरान, और रूस के विभिन्न कबीलों में निवास करते थे उनका उद्भव मध्यएशिया में हुआ। तुर्क तुरानी, उजबेक और तुर्कमान एक दूसरे के पड़ोसी कबीले थे। वे उजबेकिस्तान तुर्कमेनिस्तान, चीन के सिक्किम प्रांत और अफगानिस्तान के बल्ख इलाकों में निवास करते थे। नवीं शताब्दी में अरबों द्वारा मध्य एशिया पर विजय कर लेने के बाद तुर्कों ने इस्लाम अपना लिया। इसके बाद तुर्क समुच्च अरब में फैल गये। आज के तुर्की की स्थापना तुर्कों ने ही की। बहुत से तुर्कों ने खलीफा की अधीनता नाम मात्र के लिए कुबूल की और खूद शासक बन बैठे। महमूद गजनवी ऐसा ही शासक था।

गजनवी राजवंश एक तुर्क मुस्लिम राजवंश था जिसने 975 ईसवी से 1186 ईसवी काल में अधिकाँश ईरान, आमू पार क्षेत्रों और उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप पर राज किया। इसकी स्थापना सुबुक्तिगिन ने तब की थी जब उसे अपने ससुर अल्पतिगिन की मृत्यु पर गज़ना (आधुनिक गज़नी प्रांत) का राज मिला था। अल्प तिगिन स्वयं कभी खुरासान के सामानी साम्राज्य का सिपहसालार हुआ करता था जिसने अपनी अलग रियासत कायम कर ली थी।

गजनबी मूलतः ईरान के रहने वाले थे परन्तु तुर्क क्षेत्रों में रहने के कारण तुर्क कहलाये। अलप्तगीन के बाद उसका दामाद सुबुक्तिगीन उसका उत्तराधिकारी बना। सुबुक्तिगीन ने 990 ई. में हिन्दुशाही राजवंश जिसका शासन पाकिस्तान में जलालाबाद से सरहिन्द और कश्मीर से मुल्तान तक फैला हुआ था, पर आक्रमण किया और उसके राज्यक्षेत्र को गजनी साम्राज्य में मिला लिया। सुबुक्तिगीन के बाद उसका पुत्र महमूद गजनवी सुल्तान की उपाधि धारण करके गजनी की गद्दी पर बैठा वह सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला पहला मुस्लिम शासक था। उसने भारत पर लगभग 17 बार आक्रमण किया। उसने सबसे महत्वपूर्ण हमला सोमनाथ (1025 ई.) में किया। द्वितीय तुर्क आक्रमणकारी मुहम्मद गौरी था वह गोर प्रांत का सुल्तान था। 1191 ई. में उसने पृथ्वीराज चौहान तृतीय से तराइन (हरियाणा) में युद्ध किया था। इसे तराइन का प्रथम युद्ध कहते हैं। इस युद्ध में पृथ्वीराज ने मुहम्मद गौरी को पराजित किया। इसी मैदान पर तराइन का द्वितीय युद्ध 1192 ई. में हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज को पराजित किया। मुहम्मद गौरी गोर प्रांत वापिस लौट गया परन्तु वह विजित क्षेत्रों पर शासन करने के लिए सेवक कुतुबुद्दीन ऐबक को छोड़ गया।

### अल्बरूनी

महमूद गजनबी ने ख्वारिज्म शाह को हराकर अल्बरूनी को प्राप्त किया। अल्बरूनी महमूद के साथ 1018 ई. में भारत आया। तत्कालीन भारत के बारे में उसने अपनी रचना किताब-उल-हिन्द (तहकीक-ए-हिन्द) में विशद वर्णन किया है। किताब-उल-हिन्द एक विस्तृत ग्रंथ है जो धर्म दर्शन त्रयौहार, खगोल विज्ञान, रीति रिवाज, सामाजिक जीवन भारतीय मापन विधियाँ आदि 80 अध्यायों में विभक्त है अपने वर्णनों में उसने भागवत गीता, वेदपुराण, पतंजली के ग्रंथ मनोस्मृति का भी उल्लेख किया है। भारतीय साहित्य के अध्ययन के लिए अल्बरूनी ने संस्कृत सीखी और पुराणों का उद्धृत किया साथ ही उसने ब्रह्म सिद्धांत बृहद संहिता सांख्य और योग दर्शन पर भी अध्ययन किया। उसने महमूद गजनबी के जीवन पर आधारित तारीख-ए-यामिनी की भी रचना की।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

जाता था। उसने इक्ता की व्यवस्था लागू की इस व्यवस्था के अंतर्गत उसने अपनी सल्तनत को छोटे-छोटे भूराजस्वों ईकाइयों में बांट दिया। प्रत्येक ईकाई को इक्ता के नाम से जानते थे तथा इक्ता के मुखिया को इक्तादार या भुक्ति या वाली के नाम से जानते थे। इक्ता हस्तांतरणीय होती थी। उसने अपनी प्रशासनिक सहायता हेतु उसने 40 तुर्क सरदारों का एक दल गठित किया। जिसे तुर्क-ए-चहलगामी या चालीसा के नाम से जानते थे। इसने चाँदी के सिक्के (टका) तथा ताँबा के सिक्के (जीतल) नामक दो सिक्के जारी किये। कुतुबमीनार जिसकी नींव कुतुबुद्दीन ऐबक के शासनकाल में ही पड़ गई थी। परन्तु उसकी अकास्मिक मृत्यु के कारण वह कुतुबमीनार का निर्माण पूर्ण नहीं करा पाया। तत्पश्चात इल्तुतमिश ने कुतुबमीनार का निर्माण पूर्ण करवाया। इल्तुतमिश की छः सन्तानें थी — 1. नसीरुद्दीन महमूद 2. शजिया बेगम 3. रजिया सुल्तान 4. यासिर 5. मूर्जुद्दीन बहराम तथा 6. रूकनूद्दीन फिरोज। 1236 में इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात उसे महरौली में कुतुबमीनार के निकट दफनाया गया। इल्तुतमिश का सबसे बड़ा बेटा नसीरुद्दीन महमूद 1229 में बीमारी के कारण मर गया। उसके सभी बेटों में वही योग्य था जब इल्तुतमिश बीमार पड़ा तो उसने रजिया सुल्तान को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया लेकिन इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद दरबार के तुर्क सरदारों ने महिला शासक के अधीन काम करने से मना कर दिया। उन्होंने इल्तुतमिश के सबसे छोटे बेटे रूकनूद्दीन फिरोजशाह को गद्दी पर बैठाया। लेकिन छः माह के भीतर ही रजिया सुल्तान ने अपनी ताकत से रूकनूद्दीन को हटा कर गद्दी पर कब्जा कर लिया। 1240 ई. में तुर्क सरदारों ने रजिया सुल्तान को मरवा डाला तथा उसके स्थान पर उसके भाई मूर्जुद्दीन बहराम को सुल्तान बना दिया। बहराम ने दो वर्षों तक शासन किया। इसके बाद रूकनूद्दीन फिरोज के बेटे अलाउद्दीन मसूदशाह ने 1242 ई. में उसे गद्दी से हटाकर गद्दी पर कब्जा कर लिया। इसने 1246 ई. तक शासन किया। इसके बाद नसीरुद्दीन महमूद के बेटे नसीरुद्दीन फिरोजशाह (इसने स्वयं को नसीरुद्दीन महमूद भी कहा) ने तुर्क सरदारों की सहायता से अलाउद्दीन मसूदशाह को गद्दी से हटा दिया और सुल्तान बन बैठा। इसने 1246 से 1265 तक शासन किया।

### 3. रजिया सुल्तान (1236-40)

रजिया इतिहास में जिसे सामान्यतः "रजिया सुल्तान" या "रजिया सुल्ताना" के नाम से जाना जाता है, दिल्ली सल्तनत की सुल्तान थी। रजिया ने 1236 से 1240 तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया। वह इल्तुतमिश की पुत्री थी। तुर्की मूल की रजिया को अन्य मुस्लिम राजकुमारियों की तरह सेना का नेतृत्व तथा प्रशासन के कार्यों में अभ्यास कराया गया, ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसका इस्तेमाल किया जा सके। रजिया सुल्ताना मुस्लिम एवं तुर्की इतिहास कि पहली महिला शासक थीं।

रजिया को उसके पिता शम्स-उद-दिन इल्तुतमिश की मृत्यु (12 अप्रैल 1236) के पश्चात दिल्ली का सुल्तान बनाया गया। इल्तुतमिश, पहला ऐसा शासक था, जिसने अपने बाद किसी महिला को उत्तराधिकारी नियुक्त किया। (स्रोतों के अनुसार, पहले उसके बड़े बेटे को उत्तराधिकारी के रूप में तैयार किया गया, परन्तु दुर्भाग्यवश उसकी अल्प आयु में मृत्यु हो गयी) लेकिन, मुस्लिम वर्ग को इल्तुतमिश का किसी महिला को वारिस बनाना नामंजूर था, इसलिए उसकी मृत्यु के पश्चात उसके छोटे बेटे रूकन-उद-दीन फिरोज शाह को राजसिंहासन पर बैठाया गया।

रूकन-उद-दीन, का शासन बहुत ही कम समय के लिये था, इल्तुतमिश की विधवा, शाह तुर्कान का शासन पर नियंत्रण नहीं रह गया था। विलासी और लापरवाह रूकन-उद-दीन के खिलाफ जनता में इस सीमा तक आक्रोश उमड़ा, कि 9 नवंबर 1236 को रूकन-उद-दीन तथा उसकी माता, शाह तुर्कान की हत्या कर दी गयी। उसका शासन मात्र छह माह का था। इसके पश्चात सुल्तान के लिए अन्य किसी विकल्प के अभाव में मुसलमानों को एक महिला को शासन की बागडोर देनी पड़ी और रजिया सुल्तान दिल्ली की शासिका बन गई।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

बलवन का उत्तराधिकारी केकूबाद बना। वह बलवन का पौत्र था। 1290 ई. में केकूबाद पंजाब के गवर्नर फिरोजशाह के द्वारा मारा गया। फिरोजशाह जलालुद्दीन खिलजी के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

### खिलजी वंश (1290–1320)

#### जलालुद्दीन खिलजी (1290–96)

खिलजियों के हाथ में सत्ता आने से सत्ता कुलीन तुर्कों के हाथ से फिसलकर एक ऐसे वर्ग के हाथ में आ गयी। जिसमें निम्न वर्गीय तुर्क और अफगान और हिन्दुस्तानी शामिल थे। इसे खिलजी क्रांति भी कहा गया। जलालुद्दीन खिलजी या फिरोजशाह मलिक खिलजी वंश का संस्थापक था। जलालुद्दीन ने अपने भतीजे जो कि उसका दामाद भी था, को इलाहाबाद के कड़ा का गवर्नर नियुक्त किया। जब जलालुद्दीन खिलजी दिल्ली की गद्दी पर बैठा तब वह 70 वर्ष का था। जलालुद्दीन ने अपने भतीजे अलाउद्दीन को दक्षिण विजय अभियान पर भेजा। उसने देवगिरी के राजा रामचन्द्रदेव पर आक्रमण किया। जहाँ उसने ढेर सारी सम्पदा प्राप्त की। जब जलालुद्दीन को अपने भतीजे की विजय का पता चला तो वह उससे मिलने कड़ा पहुंचा। अलाउद्दीन ने अपने चाचा को मौत के घाट उतार दिया तथा स्वयं को दिल्ली सल्तनत का सुल्तान घोषित कर दिया।

#### अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.)

उसके बचपन का नाम अली गुरसप था अपने चाचा जलालुद्दीन के शासन काल में वह कड़ा (इलाहाबाद) का गवर्नर था। उसने भारत में साम्राज्यवाद प्रारंभ किया। उसने रायकर्ण पर आक्रमण किया (गुजरात राजा पर 1299ई.)। उसने रणथम्भौर (सावइमाधौपुर –राजस्थान) के राजा हमीरदेव पर 1300 ई. में आक्रमण किया।

#### चित्तौड़ आक्रमण एवं मेवाड़ विजय

मेवाड़ के शासक राणा रतन सिंह थे, जिनकी राजधानी चित्तौड़ थी। चित्तौड़ का किला सामरिक दृष्टिकोण से बहुत सुरक्षित स्थान पर बना हुआ था। अन्ततः 28 जनवरी 1303 ई. को सुल्तान चित्तौड़ के किले पर अधिकार करने में सफल हुआ। रावल रतन सिंह युद्ध में शहीद हुये और उनकी पत्नी रानी पद्मिनी ने अन्य स्त्रियों के साथ जौहर कर लिया। उसने चित्तौड़ का नाम खज़िर ख़ाँ के नाम पर 'खज़िराबाद' रखा और खज़िर ख़ाँ को सौंप कर दिल्ली वापस आ गया। इसी के साथ मेवाड़ में रावल शाखा का अंत हुआ, कालांतर में दूसरी शाखा सिसोदिया वंश की थी, जिसके शासक "राणा" कहलाते थे चित्तौड़ को पुनः स्वतंत्र कराने का प्रयत्न राजपूतों द्वारा जारी था। अलाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् गुहिलौत राजवंश के हमीरदेव ने मालदेव पर आक्रमण कर 1321 ई. में चित्तौड़ सहित पूरे मेवाड़ को आज़ाद करवा लिया। इस तरह अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद चित्तौड़ एक बार फिर पूर्ण स्वतन्त्र हो गया।

#### अलाउद्दीन खिलजी के समकालीन दक्षिण भारत में सिर्फ तीन महत्वपूर्ण शक्तियाँ थीं—

देवगिरि के यादव दक्षिण-पूर्व तेलंगाना के काकतीय और द्वारसमुद्र के होयसल अलाउद्दीन द्वारा दक्षिण भारत के राज्यों को जीतने के उद्देश्य के पीछे धन की चाह एवं विजय की लालसा थी। वह इन राज्यों को अपने अधीन कर वार्षिक कर वसूल करना चाहता था। दक्षिण भारत की विजय का मुख्य श्रेय 'मलिक काफूर' को ही जाता है। अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में दक्षिण में सर्वप्रथम 1303 ई. में तेलंगाना पर आक्रमण किया गया। तेलंगाना के शासक प्रताप रुद्रदेव द्वितीय ने अपनी एक सोने की मूर्ति बनवाकर और उसके गले में सोने की जंजीर डाल कर आत्मसमर्पण हेतु मलिक काफूर के पास भेजा था। इसी अवसर पर प्रताप रुद्रदेव ने मलिक काफूर को संसार प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा दिया था।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

साहित्य के अतिरिक्त संगीत के क्षेत्र में भी खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने भारतीय और ईरानी रागों का सुन्दर मिश्रण किया और एक नवीन राग शैली इमान, जिल्फ़, साजगरी आदि को जन्म दिया। भारतीय गायन में क़व्वाली और सितार को इन्हीं की देन माना जाता है। इन्होंने गीत के तर्ज पर फ़ारसी में और अरबी ग़ज़ल के शब्दों को मिलाकर कई पहेलियाँ और दोहे भी लिखे हैं।

### मुबारक खिलजी (1316–20)

वह अलाउद्दीन खिलजी का उत्तराधिकारी था। उसने स्वयं को खलीफ़ा घोषित किया (धार्मिक सर्वोच्च)। उसने अलवासिक विल्लाह की उपाधि धारण की। सामान्यतः वह महिलाओं के कपड़े पहनता था।

### तुगलक वंश (1320–1412 ई.)

गयासुद्दीन तुगलक ने अपनी योग्यता और शक्ति के बल पर सत्ता पर अधिकार किया था। वह एक बेहद महत्वकांक्षी शासक था। उसने सुदूर दक्षिण तक सल्तनत का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया। गयासुद्दीन तुगलक के पुत्र जौना खान ने दक्षिण अभियानों का नेतृत्व किया।

#### (1) गयासुद्दीन तुगलक (1320–25)

गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली सल्तनत में तुगलक वंश का शासक था। गाज़ी मलिक या तुगलक गाज़ी, गयासुद्दीन तुगलक (1320–1325 ई.) के नाम से 8 सितम्बर 1320 को दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। इसे तुगलक वंश का संस्थापक भी माना जाता है। इसने कुल 29 बार मंगोल आक्रमण को विफल किया। सुल्तान बनने से पहले वह कुतुबुद्दीन मुबारक ख़लजी के शासन काल में उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रान्त का शक्तिशाली गवर्नर नियुक्त हुआ था। वह दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था, जिसने अपने नाम के साथ 'गाज़ी' शब्द जोड़ा था। गयासुद्दीन का पिता करौना तुर्क गुलाम था व उसकी माता हिन्दू थी। उसने सिंचाई के लिए कुँए एवं नहरों का निर्माण करवाया। सम्भवतः नहर का निर्माण करवाने वाला गयासुद्दीन प्रथम सुल्तान था। अलाउद्दीन ख़लजी की कठोर नीति के विरुद्ध उसने उदारता की नीति अपनायी, जिसे बरनी ने 'रस्मेमियान' अथवा 'मध्यपंथी नीति' कहा है।

1321 ई. में गयासुद्दीन ने वारंगल पर आक्रमण किया, किन्तु वहाँ के काकतीय राजा प्रताप रुद्रदेव को पराजित करने में वह असफल रहा। 1323 ई. में द्वितीय अभियान के अन्तर्गत गयासुद्दीन तुगलक ने शाहजादे 'जौना ख़ाँ' (मुहम्मद बिन तुगलक) को दक्षिण भारत में सल्तनत के प्रभुत्व की पुनःस्थापना के लिए भेजा। जौना ख़ाँ ने वारंगल के काकतीय एवं मदुरा के पाण्ड्य राज्यों को विजित कर दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया। इस प्रकार सर्वप्रथम गयासुद्दीन के समय में ही दक्षिण के राज्यों को दिल्ली सल्तनत में मिलाया गया। इन राज्यों में सर्वप्रथम वारंगल था। गयासुद्दीन तुगलक पूर्णतः साम्राज्यवादी था। इसने अलाउद्दीन ख़लजी की दक्षिण नीति त्यागकर दक्षिणी राज्यों को दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया।

गयासुद्दीन जब बंगाल में था, तभी सूचना मिली कि, जौना ख़ाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) निज़ामुद्दीन औलिया का शिष्य बन गया है और वह उसे राजा होने की भविष्यवाणी कर रहा है। निज़ामुद्दीन औलिया को गयासुद्दीन तुगलक ने धमकी दी तो, औलिया ने उत्तर दिया कि, "हुनूज दिल्ली दूर अस्त, अर्थात् दिल्ली अभी बहुत दूर है। हिन्दू जनता के प्रति गयासुद्दीन तुगलक की नीति कठोर थी। गयासुद्दीन तुगलक संगीत का घोर विरोधी था।

जब गयासुद्दीन तुगलक बंगाल अभियान से लौट रहा था, तब तुगलकाबाद से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अफ़ग़ानपुर में एक महल (जिसे उसके लड़के जूना ख़ाँ के निर्देश पर अहमद अयाज ने लकड़ियों से निर्मित करवाया था) में सुल्तान गयासुद्दीन के प्रवेश करते

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

नाम 'कुतुबाबाद' रखा था और मुहम्मद बिन तुगलक ने इसका नाम बदलकर दौलताबाद कर दिया। सुल्तान की इस योजना के लिए सर्वाधिक आलोचना की गई। मुहम्मद तुगलक द्वारा राजधानी परिवर्तन के कारणों पर इतिहासकारों में बड़ा विवाद है, फिर भी निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, देवगिरि का दिल्ली सल्तनत के मध्य स्थित होना, मंगोल आक्रमणकारियों के भय से सुरक्षित रहना, दक्षिण-भारत की सम्पन्नता की ओर खिंचाव आदि ऐसे कारण थे, जिनके कारण सुल्तान ने राजधानी परिवर्तित करने की बात सोची। मुहम्मद तुगलक की यह योजना भी पूर्णतः असफल रही और उसने 1335 ई. में दौलताबाद से लोगों को दिल्ली वापस आने की अनुमति दे दी। राजधानी परिवर्तन के परिणामस्वरूप दक्षिण में मुस्लिम संस्कृति का विकास हुआ, जिसने अंततः बहमनी साम्राज्य के उदय का मार्ग खोला।

### सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन

तीसरी योजना के अन्तर्गत मुहम्मद तुगलक ने सांकेतिक व प्रतीकात्मक सिक्कों का प्रचलन करवाया। सिक्के संबंधी विविध प्रयोगों के कारण ही एडवर्ड टामस ने उसे 'धनवानों का राजकुमार' कहा है। मुहम्मद तुगलक ने 'दोकानी' नामक सिक्के का प्रचलन करवाया। बरनी के अनुसार सम्भवतः सुल्तान ने राजकोष की रिक्तता के कारण एवं अपनी साम्राज्य विस्तार की नीति को सफल बनाने हेतु सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन करवाया। सांकेतिक मुद्रा के अन्तर्गत सुल्तान ने संभवतः पीतल (फरिश्ता के अनुसार) और तांबा (बरनी के अनुसार) धातुओं के सिक्के चलाये, जिसका मूल्य चांदी के रुपये टका के बराबर होता था। सिक्का ढालने पर राज्य का नियंत्रण नहीं रहने से अनेक जाली टकसाल बन गये। लगान जाली सिक्के से दिया जाने लगा, जिससे अर्थव्यवस्था ठप्प हो गई। सांकेतिक मुद्रा चलाने की प्रेरणा चीन तथा ईरान से मिली। वहाँ के शासकों ने इन योजनाओं को सफलतापूर्वक चलाया, जबकि मुहम्मद तुगलक का प्रयोग विफल रहा। सुल्तान को अपनी इस योजना की असफलता पर भयानक आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ा।

### खुरासान एवं कराचिल अभियान

चौथी योजना के अन्तर्गत मुहम्मद तुगलक के खुरासान एवं कराचिल विजय अभियान का उल्लेख किया जाता है। कराचिल तुर्कमेनिस्तान का एक शहर है तथा प्राचीन खुरासान एशिया का एक ऐतिहासिक क्षेत्र था जिसमें आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज़बेकिस्तान, ताजिकिस्तान और पूर्वी ईरान के बहुत से भाग शामिल थे। ध्यान दीजिये कि आधुनिक ईरान में एक 'ख़ोरासान प्रांत' है जो इस ऐतिहासिक खुरासान इलाके का केवल एक भाग है। खुरासान को जीतने के लिए मुहम्मद तुगलक ने 3,70,000 सैनिकों की विशाल सेना को एक वर्ष का अग्रिम वेतन दे दिया, परन्तु राजनीतिक परिवर्तन के कारण दोनों देशों के मध्य समझौता हो गया, जिससे सुल्तान की यह योजना असफल रही और उसे आर्थिक रूप से हानि उठानी पड़ी। कराचिल अभियान के अन्तर्गत सुल्तान ने ख़ुसरो मलिक के नेतृत्व में एक विशाल सेना को पहाड़ी राज्यों को जीतने के लिए भेजा। उसकी पूरी सेना जंगली रास्तों में भटक गई, इब्न बतूता के अनुसार अन्ततः केवल दस अधिकारी ही बचकर वापस आ सके। इस प्रकार मुहम्मद तुगलक की यह योजना भी असफल रही।

मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में ही दक्षिण में 1336 ई. में 'हरिहर' एवं 'बुक्का' नामक दो भाईयों ने स्वतंत्र 'विजयनगर' की स्थापना की। अफ़्रीकी यात्री इब्न बतूता को 1333 ई. में मुहम्मद ने अपने राजदूत के रूप में चीन भेजा। इब्न बतूता ने अपनी पुस्तक 'रेहला' में मुहम्मद तुगलक के समय की घटनाओं का वर्णन किया है। मुहम्मद तुगलक धार्मिक रूप में सहिष्णु था। जैन विद्वान एवं संत 'जिनप्रभु सूरी' को दरबार में बुलाकर सम्मान प्रदान किया। मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था, जिसने हिन्दू त्योहारों (होली, दीपावली) में भाग लिया। दिल्ली के प्रसिद्ध सूफ़ी शेख़ 'शिहाबुद्दीन' को 'दीवान-ए-मुस्तख़राज' नियुक्त किया तथा शेख़ 'मुईजुद्दीन' को गुजरात का गवर्नर तथा 'सैय्यद कलामुद्दीन अमीर किरमानी' को सेना में नियुक्त किया। शेख़ 'निज़ामुद्दीन

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### तैमूर लंग

तैमूर 1369 में समरकन्द (उजबेकिस्तान) का शासक बना। वह एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं महान सेनापति था। अपनी विजयों के फलस्वरूप उसने ईरान, अफगानिस्तान, सीरिया इत्यादि को जीतकर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। धन के लालच में उसने दिल्ली सल्तनत पर 1398 में आक्रमण किया। उस समय नसिरुद्दीन महमूद जो कि तुगलक वंश का अंतिम शासक था। दिल्ली पर राज कर रहा था। दिल्ली जीतने के बाद उसने 15 दिन तक दिल्ली में कत्लेआम करवाया। हजारों लोगों की हत्या करने के बाद वह 1399 में वापस लौट गया। वापस जाते समय उसमें खिज़्रखान की सेवा से प्रसन्न होकर उसे मूलतान और दीपालपुर की सुबेदारी सौंप दी। कालांतर में खिज़्रखान ने दिल्ली पर आक्रमण कर दौलत खान को दी जिसे तैमूर दिल्ली का शासक बनाकर गया था को हराकर सुल्तान बन गया। उसने सैयद वंश की स्थापना की।

### सैयद वंश (1414–1451 ई.)

इस वंश की स्थापना खिज़्रखान ने की। खिज़्रखान के बाद मुबारकशाह सैयद वंश का सबसे योग्य शासक बना। उसके बाद अलाउद्दीन आलमशाह सुल्तान बना। 1451 ईसवी में बहलोल लोदी ने अलाउद्दीन आलमशाह को सत्ता से हटाकर लोदी वंश की स्थापना की।

### लोदी वंश (1451–1536 ई.)

1. **बहलोल लोदी (1451–1488)** – यह लोदी वंश का संस्थापक था इसने अफगान भाईचारे की भावना पर काम किया। इसने शर्की शासकों को पराजित कर जौनपुर को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

2. **सिकंदर लोदी (1488–1517)** – यह लोदी वंश का सबसे महान शासक था जिसने बिहार व पश्चिम बंगाल पर विजय प्राप्त की तथा आगरा नामक नया शहर बसाया तथा दिल्ली से आगरा को अपनी राजधानी बनाई। उसने कृषि योग्य भूमि को नापने के लिए गजे सिकेन्दरी नामक एक नया पैमाना निर्मित करवाया।

3. **इब्राहिम लोदी (1517–1526)** – यह दिल्ली सल्तनत का आखिरी सुल्तान था। यह सिकंदर लोदी का बेटा। इसके शासनकाल में पंजाब के गवर्नर दौलत खां लोदी ने इब्राहिम लोदी को उखाड़ फेंकने हेतु बाबर को आमंत्रित किया। 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी तथा बाबर के बीच युद्ध हुआ। जिसमें इब्राहिम लोदी पराजित हुआ एवं इसी के साथ दिल्ली सल्तनत का भी अन्त हो गया पानीपत के इस प्रथम युद्ध के परिणाम स्वरूप दिल्ली पर मुगलवंश की स्थापना हुई।

### दिल्ली सल्तनत का प्रशासन

1. राजा संपूर्ण प्रशासन की धुरी होता था जिसे सुल्तान के नाम से जाना जाता था। राजा में राजनीतिक, विधिक सैनिक शक्तियां निहित थी।

2. सुल्तान की सहायता के लिए कई मंत्रालय होते थे।

### प्रमुख विभाग

(i) **दीवान-ए-विजारत** – यह सुल्तान का प्रधानसलाहकार एवं वित्त प्रबंधन का कार्य देखता था। इसका मुखिया वजीर कहलाता था।

(ii) **दीवान-ए-अर्ज** – यह सैन्य विभाग कहलाता था। इसका प्रमुख अरिज-ए-मुमालिक होता था। यह विभाग बलबन के द्वारा निर्मित किया गया।

(iii) **दीवान-ए-इंशा** – यह शाही पत्राचार से संबंधित कार्यों का संपादन करता था। इसका मुखिया दबीर-ए-मुमालिक होता था।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### विजय नगर साम्राज्य

दिल्ली सल्तनत में व्यापक राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर अनेक राज्य स्वतंत्र हुए। दक्षिण भारत में इसका लाभ उठाते हुए विजय नगर एवं बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई। इन दोनों राजवंशों ने दक्षिण भारत की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया किन्तु आपसी संघर्ष में दोनों के पतन का मार्ग भी प्रशस्त किया। वर्तमान कर्नाटक में स्थित हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी। सन 1336 ई. में विजयनगर अर्थात (जीत का शहर) साम्राज्य की स्थापना हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाईयों ने की थी। विजय नगर साम्राज्य पर 4 वंशों ने शासन किया—

1. संगम वंश (1336—1485 ई.) — हरिहर बुक्का
2. सलूव वंश (1485—1505 ई.) — नरसिंह सलूव
3. तुलूव वंश (1505—1570 ई.) — वीर नरसिंह तुलूव
4. अरविडू वंश (1570—1650 ई.) — तिरुमलराय

**संगम वंश** — हरिहर प्रथम यह विजयनगर साम्राज्य का प्रथम शासक था। इसने पहले अनैयगोडी तथा बाद में हम्पी को राजधानी बनाया। बुक्का प्रथम इसने वेद मार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की तथा मदुरा को अपने साम्राज्य में मिला लिया। गंगा देवी ने इसका वर्णन मदुरा विजयम में किया है। बुक्का प्रथम के पश्चात हरिहर द्वितीय शासक बना। इसने गोवा तथा बेलगांव को बहमनी राज्य से छीनकर विजय नगर साम्राज्य में मिला लिया इसने महाराजाधिराज की उपाधि ली।

हरिहर द्वितीय के पश्चात देवराय प्रथम शासक बना। यह एक महान शासक था। इसने तुंगभद्रा नदी पर हरिद्रा नामक बांध बनवाकर नहरों का निर्माण किया जिससे राज्य में कृषि का विकास हुआ। संगम वंश का अंतिम शासक देवराय द्वितीय था। इसे गजबैठकर भी कहते हैं। यह अपने वंश का शक्तिशाली एवं महानतम शासक था। इसने बहमनी साम्राज्य से बराबरी करने के लिए बड़ी संख्या में मुसलमानों को अपनी सेना में भर्ती कर लिया।

**सालुव वंश** — सालुव नरसिंह शक्तिशाली सामंत ने राज्य में व्याप्त राजनीति अस्थिरताओं का लाभ उठाते हुए राजसिंघासन पर अधिकार कर लिया। इसे प्रथम बलापहार कहा गया।

**तुलुव वंश** — तुलुव वंश की स्थापना वीर नरसिंह ने की थी। इसमें पुर्तगाली गर्वनर अलमेडा से घोड़ों को खरीदने का समझौता किया। इसमें विवाह कर को भी हटा दिया। कृष्ण देवराय इस वंश के सबसे शक्तिशाली शासक थे। कृष्णदेवराय वीर नर सिंह के अनुज थे। बाबर ने इनको भारत का सर्वाधिक शासक बनाया। कृष्णदेवराय के राज्यारोहण के समय विजय नगर अति विषम परिस्थितियों में था। उड़ीसा की गजपति बीजापुर एवं पुर्तगाली सभी विजयनगर के पतन के लाभ उठाने का प्रयास कर रही थी। कृष्ण देवराय के पुर्तगालियों से अच्छे संबंध थे।

इन्होंने राजनीति तथा प्रशासन संबंधी अपने विचार अपने तेलगु ग्रंथ आमुक्त माल्यदा (राजनीति पर आधारित ग्रंथ) में व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत में जामवंती कल्याणम तथा उषा परिणय की रचना की। महान विद्वान तथा विद्वानों का संरक्षक होने के कारण इन्हे आंध्र भोज, अभिनव भोज आदि के नाम से पुकारा जाता था। इनके दरबार में तेलगु के आठ विद्वान सुशोभित होते थे जिन्हे अष्ट दिग्गज के नाम से जाना जाता था। उसने विजयमहल हजारा राममंदिर तथा विठ्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण हम्पी में करवाया। उसने यवन राज स्थापनाचार्य और अभिनव भोज की उपाधि धारण की। अच्युत देवराय यह कृष्णदेवराय का चचेरा भाई था। क्योंकि उनका पुत्र सदाशिवराय मात्र 18 महिने का था। जब कृष्णदेवराय की मृत्यु हुई थी।



## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### नायंकर व्यवस्था

विजय नगर साम्राज्य की विशिष्ट व्यवस्था नायंकर व्यवस्था थी। साम्राज्य की समस्त भूमि तीन भागों में विभाजित थी।

1. भण्डारवाद भूमि— यह भूमि राजकीय भूमि होती थी और इस प्रकार की भूमि कम थी।
2. समरन् भूमि— दूसरे प्रकार की भूमि समरन् भूमि कहलाती थी। यह भूमि सैनिक सेवा के बदले अमरनायकों और पलाइगरों को दी जाती थी। इस प्रकार की भूमि अधिक थी। इस प्रकार की भूमि कुल भूमि का 3/4 भाग थी किन्तु यह भूमि वंशानुगत नहीं थी।
3. मान्या भूमि— तीसरे प्रकार की भूमि मान्या भूमि होती थी। यह भूमि ब्राह्मणों, मंदिरों या मठों को दान में दी जाती थी।

पुर्तगाली लेखक नूनिज और पायस ने नायंकर व्यवस्था का अध्ययन किया है। उनके विचार में नायक बड़े-बड़े सामंत होते थे। इन नायकों को केन्द्र में दो प्रकार के संपर्क अधिकारी रखने पड़ते थे। इनमें से एक अधिकारी राजधानी में स्थित नायक की सेना का सेनापति होता था और दूसरा सम्बन्धित नायक का प्रशासनिक एजेण्ट होता था, जिसे स्थानापति कहा जाता था। आगे चलकर नायंकर व्यवस्था के कारण विजयनगर साम्राज्य कमजोर पड़ गया। नायकों पर नियंत्रण के लिए महामंडलेश्वर या विशेष कमिश्नरों की नियुक्ति की जाती थी। पहली बार इसकी नियुक्ति अच्युतदेवराय के समय हुई।

### आयंगर व्यवस्था

आयंगर व्यवस्था ग्रामीण प्रशासन से जुड़ी व्यवस्था है। अब गाँव में चोल काल की स्थानीय स्वायत्त शासन की परम्परा कमजोर पड़ गयी और वास्तविक शक्ति 12 ग्रामीण अधिकारियों के हाथों में चली गयी। ये प्रशासनिक अधिकारी आयंगर कहलाते थे। इनका पद पैतृक या वंशानुगत होता था। इन अधिकारियों के पदों की खरीद-बिक्री भी होती थी। इनका वेतन भूमि के रूप में या कृषि की उपज के एक अंश के रूप में दिया जाता था। इस प्रकार आयंगर प्रशासनिक अधिकारियों का सामूहिक नाम था।

### शिक्षा एवं साहित्य

विजय नगर के शासक शिक्षा, साहित्य एवं ज्ञान के महान संरक्षक थे। उनके काल में तमिल, तेलगू, कन्नड़ एवं मलयालम अपने चर्मोत्कर्ष पर था। कृष्ण देवराय का काल तेलगू भाषा का स्वर्णकाल कहलाता था। कृष्णदेवराय के दरबारी अल्लासी पेड्डाना को तेलगू भाषा में कविता के लिये पितामह की उपाधि प्राप्त की। इस काल में जैन तीर्थंकरों की जीवनियाँ भी रची गईं। वीणा इस काल का लोकप्रिय वाद्य यंत्र था।

### अष्ट दिग्गज

अष्टदिग्गज विजयनगर राज्य के राजा कृष्णदेव राय के दरबार में विभूषित आठ कवियों के लिये प्रयुक्त शब्द है। कहा जाता है कि इस काल में तेलुगु साहित्य अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच गया था। कृष्णदेव के दरबार में ये कवि साहित्य सभा के आठ स्तम्भ माने जाते थे। इस काल (1540 से 1600) को तेलुगू कविता के सन्दर्भ में 'प्रबन्ध काल' भी कहा जाता है। ये अष्टदिग्गज ये हैं—

अल्लसानि पेदन्न	मनुचरित सम्भव हरिकथा सार
नन्दी तिम्मन	पारिजात हरण
भट्टमूर्ति	नरस भूपालियम
धूर्जटि	कलहस्ति महात्म्य
मादय्य गारि मल्लन	राजशेखर चरित
अय्यल राजु रामभण्डु	सकल कथा सार संग्रह रामाययुदयम
पिंगलीसूरन	राघव पाण्डवीय

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### बहमनी साम्राज्य

बहमनी सल्तनत (1317–1518) दक्कन का एक इस्लामी राज्य था। इसकी स्थापना 3 अगस्त 1347 को एक तुर्क-अफ़गान सूबेदार अलाउद्दीन बहमन शाह ने की थी। इसका प्रतिद्वंदी हिन्दू विजयनगर साम्राज्य था। बाद में इसका विघटन हो गया जिसके फलस्वरूप गोलकुण्डा, बीजापुर, बीदर, बरार और अहमदनगर के राज्यों का उदय हुआ। इन पाँचों को सम्मिलित रूप से दक्कन सल्तनत कहा जाता था।

अलाउद्दीन बहमन शाह जिसे अलाउद्दीन हसन गंगू बहमन शाह और हसन गंगू के नाम से भी जाना जाता है, मुहम्मद बिन तुगलक की सेना का एक सुबेदार था जिसने दक्षिण भारत के पहले इस्लामी राज्य बहमनी सल्तनत की नींव रखी थी। अलाउद्दीन बहमन शाह का जन्म के समय का नाम हसन था। मुस्लिम इतिहासकार फ़रिश्ता के अनुसार अपने जीवन के आरंभ में वह दिल्ली में एक गंगू नामक ब्राह्मण का सेवक था। अन्य इतिहासकारों ने अलाउद्दीन को फ़ारसी शासक बहमन का वंशज बताया है। इसने गुलबर्गा और बीदर को अपनी राजधानी बनाया। फ़िरोज शाह बहमनी और महमूद गवां बहमनी राज्य के प्रमुख शासक हुए।

#### बहमनी साम्राज्य के अन्य राजा

1. **ताजुद्दीन फ़िरोजशाह** – यह महान शासक था। उसने विजयनगर को दो बार पराजित किया। लेकिन तीसरी बार वह स्वयं पराजित हो गया।
2. **सिहाबुद्दीन अहमद प्रथम** – इसने अपनी राजधानी गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित की। उसने बीदर का नाम बदलकर मुश्तफाबाद रखा। उसे संत अहमद के नाम से भी जानते हैं।
3. **अलाउद्दीन हिमायुं** – उसे उसकी निष्ठुरता के कारण जालिम शासक कहा जाता था।
4. **कलीमुल्ला** – यह बहमनी साम्राज्य का अंतिम शासक था।

#### बहमनी साम्राज्य के उत्तरवर्ती राज्य

1884 के बाद बहमनी साम्राज्य पांच भागों में बट गया।

1. **बरार** – बरार की स्थापना हिन्दु से मुसलमान बनने वाले फतह उल्ला शाह ने की। यह बहमनी साम्राज्य से पृथक होने वाला प्रथम राज्य था। इस पर शासनकाल करने वाले शासकों को इमादशाही वंश कहते हैं।
2. **बीजापुर** – बीजापुर की स्थापना युसूफ आदिल शाह ने की। इस पर शासनकाल करने वाले शासकों को आदिलशाही वंश कहते हैं। मोहम्मद आदिल शाह ने अपना मकबरा गोलगुम्बद बनवाया।
3. **अहमद नगर** – अहमद नगर की स्थापना मलिक अहमद ने की। इस पर शासनकाल करने वाले शासकों को निजामशाही वंश कहते थे।
4. **गोलकुण्डा** – गोलकुण्डा की स्थापना कुलीशाह ने की। इस पर शासनकाल करने वाले शासकों को कुतुबशाही वंश कहते थे।
5. **बीदर** – बीदर की स्थापना अमीर अली बरीद ने की। इस पर शासनकाल करने वाले शासकों को बरीदशाही वंश कहते हैं।

**तालीकोटा या राक्षस तगड़ी का युद्ध** – 23 जनवरी 1565 रामराजा (विजयनगर साम्राज्य के शासक) तथा बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुण्डा तथा बीदर की सेनाओं के संघ के मध्य

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### भक्ति एवं सूफी आंदोलन

भक्ति एवं सूफी आंदोलन ने मध्यकालीन भारतीय समाज में एक नई अध्यात्मिक एवं सामाजिक चेतना का संचार किया। इस आंदोलन का प्रभाव संपूर्ण भारत पर व्याप्त था। ये आडंबर तथा कुरुतियां हिंदु व मुस्लिम दोनों धर्मों में व्याप्त थी। ऐसे में भक्ति एवं सूफी आंदोलन में निराशा एवं अवसाद से निकालकर भक्ति एवं प्रेम का सरल मार्ग दिखाया।

#### भक्ति आंदोलन

भारत में भक्ति आंदोलन का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। भक्ति का बीज वेदों से विद्यमान है जो कि शिव ब्रह्मा विष्णु की भक्ति भावना पर आधारित है। भक्ति आंदोलन के प्रमुख दो पक्ष रहे। एक समर्पण मार्ग तथा दूसरा प्रेम मार्ग जिसमें प्रथम मार्ग में ईश्वर तथा भक्त का संबंध स्वामी तथा दास जैसा था। यह मार्ग सरल था एवं जाति वर्ग, एवं ज्ञान के बंधन से परे हर कोई इसे अपना सकता था। दूसरा मार्ग प्रेम मार्ग था। जिसमें ईश्वर तथा भक्त के संबंध समानता पर आधारित थे। यहां ईश्वर एवं भक्त के बीच प्रेम आधारित बंधन की संकल्पना थी। अतः इस मार्ग में हम श्री कृष्ण एवं गोपियों के संबंध को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

#### उद्भव एवं विकास

भक्ति एवं सूफी आंदोलन पल्लवों के काल में तमिल क्षेत्र से प्रारंभ होकर दक्षिण के विभिन्न भागों में फैल गया। इसमें अलावार संत (विष्णु भक्त संत) तथा नयनार (शिवभक्त संघ) कहे जाते थे।

#### अलवार संत

अलवार संत विष्णु भक्त थे इनकी संख्या 12 थी। अलवार भक्ति आंदोलन मूलतः भावनात्मक था दार्शनिक नहीं। इसमें मोक्ष हेतु ज्ञान व्रत या सामाजिक स्तर के कोई बंधन नहीं थे। इन्होंने गुरु भक्ति को ईश्वर भक्ति के समान बताया। आण्डाल नामक महिला संत थी।

#### नयनार संत

नयनार संत शिव भक्त थे। इनकी संख्या 63 थी। इन्होंने शिव भक्ति से संबंधित गीतों की रचना की जो तेवरम नाम से संकलित है। भक्ति का इनका संदेश वर्ग जाति या लिंग की सीमाओं से परे थे। आलवार एवं नयनार संतों ने तमिल भाषा में अपने उपदेश जनजन तक पहुंचाये इनकी रचनाओं को वेदों के समान महत्वपूर्ण माना गया।

पश्चिम भारत में महाराष्ट्र में सर्वप्रथम भक्ति आंदोलन का उदय हुआ। वस्तुतः उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के दो रूप सामने आये। एक वह जो असमान सामाजिक व्यवस्था एवं ब्राह्मणों के विशेषाधिकार का विरोध करते हुए सामाजिक समानता पर आधारित व्यवस्था का पक्षधर था। दूसरा वह जो इनके अतिरिक्त मूर्ति पूजा कर्मकाण्ड, अवतारवादी का विरोध करते हुए एक ईश्वरवाद पर बल देता था। प्रथम वर्ग से महाराष्ट्र के रामानंद मीराबाई जैसे प्रमुख संत जुड़े तथा दूसरे वर्ग में कबीर और गुरुनानक आदि संत जुड़े।

भक्ति आंदोलन की मुख्यतः दो शाखायें थी। 1. निर्गुण और 2. सगुण

निर्गुण विचार धाराओं के अनुसार ईश्वर निराकार है उसका कोई रंग रूप नहीं है। और उसे गुणों की सीमा में नहीं बंधा जा सकता है कबीर तथा गुरुनानक इस संप्रदाय के सर्वाधिक लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध संत थे। ये निराकार ईश्वर में विश्वास रखते थे।

सगुण इस विचारधारा के अनुसार ईश्वर शरीर धारी है। वह रंग आकार आनंद दया क्रोध, जैसे गुणों से युक्त है। बल्लभाचार्य, तुलसी, सूरदास, मीरा, चैतन्य आदि इस परंपरा के प्रमुख संत हैं। इन्होंने राम अथवा कृष्ण की पूजा पर बल दिया। मूर्तिपूजा अवतारवाद कीर्तन आदि उपासना पर प्रचार किया।

#### प्रमुख दार्शनिक संत

शंकराचार्य (788 से 820 ईसवी)

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

इनका जन्म मेवाड़ के मेड़ता में 1498 में रतन सिंह नामक राजपूत के घर में हुआ। इनका विवाह राणासांघा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ। इन्होंने कृष्ण को पति के रूप में स्वीकार किया। इन्होंने जयदेव के गीत गोविन्द पर टीका लिखी।

### सूरदास

इनका जन्म 1478 ई. में रूनकता नामक स्थान पर ब्रज में हुआ इन्होंने सूर सागर, सूर सरावली तथा साहित्य लहरी नामक ग्रंथों की रचना की ये अकबर के समकालीन थे।

### तुलसीदास

इनका जन्म 1532 ई. में उत्तरप्रदेश के बांदा जिले में राजापुर नामक गांव में हुआ इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे एवं माता हुलसी थी। इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था। इन्होंने राम को परम ब्रह्म परमात्मा मानकर अवधी भाषा में रामचरितमानस, गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका नामक ग्रंथों की रचना की ये भी अकबर के समकालीन थे।



## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

भारत में उन्होंने शेरशाह सूरी शेरशाह ने इसे बिलग्राम के युद्ध में पराजित कर दिया था तथा उससे बात से निर्वासित होना पड़ा उसने निर्वासन का कुछ समय काबुल सिंध अमरकोट में बिताया अंत में ईरान के शासक तहमास्य के पास शरण ली। ईरान के शासक की मदद से उसने काबुल कंधार में मध्य एशिया के क्षेत्रों को जीता। उसने 1555 ई० में शेरशाह के अधिकारियों को हराकर एक बार फिर दिल्ली आगरा पर अधिकार कर लिया। 1556 में उसकी मृत्यु हो गई इस के साथ ही, मुगल दरबार की संस्कृति भी मध्य एशियन से इरानी होती चली गयी। हुमायूँ के बेटे का नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर था। हुमायूँ की मृत्यु के समय उसका इकलौता पुत्र अकबर पंजाब के कलानौर में था। उसे वहीं पर शासक घोषित कर दिया गया।

उसने अपने शासनकाल में गुजरात के शासक बहादुरशाह तथा बिहार के अफगान शासक शेरशाह सूरी से कड़ी चुनौतियों का सामना किया। कालिंजर का किला इसकी विस्तारवादी नीति का पहला अभियान था। कालिंजर के किले पर चंदेल राजाओं का अधिकार था। हुमायूँ ने कालिंजर के किले पर एक महीने तक घेरा डाले रखा। 1531 ई. में चंदेलों को हुमायूँ के सामने समर्पण करना पड़ा। परंतु उसने 12 मन सोने के बदले में कालिंजर को वापिस कर दिया।

यद्यपि अफगानों को बाबर ने पराजित कर दिया था। परंतु वे पूरी तरह पराजित नहीं हुये थे। भारत के पूर्वी भागों विशेषकर बिहार में अफगान अभी भी एक प्रभावी शक्ति थी। अभी भी उनकी इच्छा थी कि मुगलों को भारत से खदेड़कर स्वतंत्रतः अफगान शासन की स्थापना करें। इसलिए हुमायूँ ने सबसे पहले अफगानों पर केंद्रित किया। अफगान सरदारों में सबसे शक्तिशाली सरदार शेरशाह था जो कि किसी समय बाबर की सेना में एक सैनिक के रूप में कार्य कर चुका था। शेरशाह ने चुनार (मिर्जापुर यूपी) के मजबूत किले पर कब्जा कर लिया। चुनार को बिहार का प्रवेश द्वार कहते थे। जैसे ही हुमायूँ ने यह समाचार सुना उसने कालिंजर से चुनार की ओर धावा बोल दिया। दोनों सेनाओं का आमना सामना 1539 में चौसा नामक स्थान पर हुआ। बातचीत के माध्यम से शेरखान पर शांति के लिए दबाव बनाया गया तथा शेरखान को क्षतिपूर्ति का सामना करना पड़ा। इसके पश्चात् हुमायूँ अफगान शक्ति का उन्मूलन किये बिना आगरा लौट आया। जहां उसने एक वर्ष बिताया तथा अपने प्रशासन को संगठित किया। उसे उसके न्याय के नगाड़े व न्याय की घंटी के लिए जाना जाता था। एक वर्ष पश्चात् 1540 में शेरशाह ने पुनः हुमायूँ को चुनौती दी। दोनों सेनाओं का आमना सामना कन्नौज-विलग्राम में हुआ। अन्तः हुमायूँ को हार का सामना करना पड़ा।

22 जून 1555 को उसकी सेना का सामना अफगान शासक सिकंदर सूर से हुआ। सिकंदर सूर उस समय आगरा का शासक था। इसे सरहिन्द का युद्ध कहते हैं। 23 जून 1555 को हुमायूँ एक बार पुनः आगरा की गद्दी पर बैठा। उसके कुछ ही समय बाद उसने दीनपनाह नामक एक नवीन नगर दिल्ली में स्थापित किया। वह 24 जनवरी 1556 को सीढ़ियों से गिरकर उसकी मृत्यु हो गई। हुमायूँ की जीवनी हुमायूँनामा के नाम से गुलबदन बेगम के द्वारा लिखी गई।

### शेरशाह सूरी

इसका नाम फरीद तथा पिता का नाम हसन खान था जो कि सासाराम बिहार का शासक था। फरीद ने 1527-28 में बाबर की सेना में कार्य किया। इसके पश्चात् वह बिहार लौट आया और बहार खान लोहानी का संरक्षक बन गया। उसने चुनार के गर्वनर की विधवा लाडो मलिका से शादी करके चुनार के किले को प्राप्त कर लिया। 1539 में उसने चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित किया। 1540 में उसने हुमायूँ को पुनः बिलग्राम के युद्ध में हराया। वह हजरते आला की उपाधि के साथ नाम शेरशाह सूरी रखा उसने चाँदी के सिक्के (रूपया) तथा तांबे के सिक्के (दाम) जारी किये। उसने (जी टी) ग्रांट ट्रक रोड का निर्माण करवाया जो कि कलकत्ता से पेशावर तक जाती थी। जी टी रोड पर स्थित शहर हैं- कलकत्ता- पटना- मुगलसराय- बनारस- इलाहाबाद- कानपुर- आगरा- मथुरा- शाहजहापुर- गाजियाबाद- दिल्ली- अमृतसर- लाहौर-पेशावर। उसने स्थानीय अपराधों के लिए स्थानीय जबाबदेही का सिद्धांत लागू किया।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

चाहता था की मुगल साम्राज्य का केन्द्र दिल्ली जैसे दूरस्थ शहर में हो; इसलिए उसने यह निर्णय लिया की मुगल राजधानी को फतेहपुर सीकरी ले जाया जाए जो साम्राज्य के मध्य में थी। कुछ ही समय के बाद अकबर को राजधानी फतेहपुर सीकरी से हटानी पड़ी। कहा जाता है कि पानी की कमी इसका प्रमुख कारण था। सन 1585 में उत्तर पश्चिमी राज्य के सुचारू राज पालन के लिए अकबर ने लाहौर को राजधानी बनाया। अपनी मृत्यु के पूर्व अकबर ने सन 1599 में वापस आगरा को राजधानी बनाया और अंत तक यहीं से शासन संभाला।

उसका पहला आक्रमण मालवा (मांडू) पर हुआ। बाजबहादुर रानी रूपमति का पति तथा प्रसिद्ध संगीतज्ञ उस समय मांडू का शासक था। उसने हल्दीघाटी के युद्ध में 1576 में महाराणा प्रताप मेवाड़ के शासक को पराजित किया। यद्यपि महाराणा प्रताप पराजित हुआ परंतु उसने अकबर के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया। हल्दी घाटी के युद्ध में मुगल सेना का प्रतिनिधित्व राजा मानसिंह ने किया। राजा मानसिंह अमेर (जयपुर) का कछवाहा वंश के राजा थे।

### मरियम उज़-ज़मानी

मरियम उज़-ज़मानी बेगम या हरखाबाई एक राजकुमारी थी जो मुगल बादशाह जलाल उद्दीन मुहम्मद अकबर से शादी के बाद मल्लिका-ऐ-हिन्दुस्तान बनीं। वे जयपुर की राजपूत आमेर रियासत के राजा भारमल की सब से बड़ी पुत्री थी जिसे वे बेटा समान मानते थे। उनके गर्भ से नूरुद्दीन जहाँगीर पैदा हुआ।

धार्मिक रूढ़िवादिता के विरोध में उसने 1575 उसने इबादतखाना का निर्माण करवाया। इबादतखाना वह स्थान था जहां पर विभिन्न सम्प्रदायों के विद्वान आपस में मिलते थे तथा अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं। 1581 में उसने अपना नया धर्म दीन-ए-इलाही की स्थापना की। जो कि विभिन्न धर्मों से लिये बेहतरीन मूल्यों के संयोजन पर आधारित था। हालांकि यह धर्म प्रचलित नहीं हुआ। बीरबल एक मात्र हिन्दू था जिसने इसे स्वीकार किया। अकबर ने फतेहपुर सीकरी के किले का निर्माण करवाया। यह आगरा के निकट स्थित है। ऐसा कहा जाता था। एक लम्बे समय तक पुत्र रत्न की प्राप्ति नहीं हुई। शेख सलीम-चिश्ती सूफी संत ने उसे पुत्र प्राप्त होने का आदेश दिया जिसका नाम सलीम/शेखूबाबा या जहाँगीर रखा गया। अकबर ने शेख सलीम चिश्ती के सम्मान में अपना दरबारा आगरा से फतेहपुर सीकरी स्थानांतरित किया।

### शाहज़ादा सलीम का विद्रोह

अकबर के लाड़-प्यार में पला सलीम (जहाँगीर) काफ़ी बिगड़ चुका था। वह बादशाह बनने के लिए उत्सुक था। 1599 ई. में सलीम अकबर की आज्ञा के बिना अजमेर से इलाहाबाद चला गया। यहाँ पर उसने स्वतन्त्र शासक की तरह व्यवहार करना शुरू किया। 1602 ई. में अकबर ने सलीम को समझाने का प्रयत्न किया। उसने सलीम को समझाने के लिए दक्षिण से अबुल फज़ल को बुलवाया। रास्ते में जहाँगीर के निर्देश पर ओरछा के बुन्देला सरदार वीरसिंहदेव ने अबुल फज़ल की हत्या कर दी। निःसंदेह जहाँगीर का यह कार्य अकबर के लिए असहनीय था, फिर भी अकबर ने सलीम के आगरा वापस लौटकर (1603 ई.) में माफ़ी मांग लेने पर माफ़ कर दिया।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

अकबर की धार्मिक नीति के प्रथम चरण में 1556–1573 की अवधि को लिया जा सकता है। सत्ता ग्रहण करने के कुछ वर्षों बाद ही अकबर ने अपनी उदारता का परिचय दिया। 1563 ई. में हिन्दुओं से वसूल किया जाने वाला तीर्थ यात्रा कर समाप्त कर दिया। इस तीर्थ यात्रा कर से करोड़ों की आमदनी होती थी जो राज्य के राजस्व के लिहाज से महत्वपूर्ण था। बीरबल, जोकि सम्राट के प्रिय पात्रों में से एक था, उसे अकबर के साथ यात्रा करने के दौरान अपने आराध्यों की प्रतिमाएँ रखने पर किसी तरह की कोई पाबंदी नहीं थी। 1564 ई. में अकबर द्वारा हिन्दुओं पर आरोपित धार्मिक कर जजिया को समाप्त कर दिया गया। यद्यपि जजिया को पुनः आरोपित किया गया, लेकिन अन्तिम रूप से इसे 1579 में समाप्त कर दिया गया।

### इबादतखाना (प्रार्थना गृह )

सम्राट के रूप में अकबर ने ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती व अन्य कई सूफी सन्तों की दरगाह की यात्रा भी की। आध्यात्मिक पिपासा की शान्ति के लिए अकबर ने फतेहपुर सीकरी में 1575 में इबादतखाने की स्थापना की। जैसा कि अकबर ने इबादतखाने में एकत्रित हुए लोगों से कहा था कि इबादतखाने की बहस का उसका उद्देश्य 'सत्य की खोज' है। इबादतखाने में प्रत्येक बृहस्पतिवार को संध्या के समय धार्मिक विचार-विमर्श हुआ करता था। यद्यपि आरंभ में इबादतखाने की बहसों अथवा विचार-विमर्श में केवल मुसलमानों को ही भाग लेने की इजाजत थी, लेकिन 1578 ई. में विभिन्न धर्मावलंबियों के लिए इबादतखाने के दरवाजे खोल दिए गए। अब हिन्दू, जैन, पारसी, ईसाई— सभी इबादतखाने में भाग लेने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि अब उन प्रश्नों को भी बहस में उठाया जाने लगा, जिन प्रश्नों पर मुसलमानों के एकमत थे। यह अकबर के धार्मिक विचारों के विकास का वह महत्वपूर्ण चरण था, जिसने अकबर को सुलह-ए-कुल जैसी अवधारणा तक पहुँचाया।

इबादतखाने में भाग लेने वाले विभिन्न आचार्य	
हिन्दू	देवी एवं पुरुषोत्तम
जैन	हरिविजय सूरी, जिनचन्द्र सूरी, विजयसेन सूरी एवं शान्तिचन्द्र सूरी
ईसाई	एकावीवा एवं मोंसेरात
पारसी	दस्तूर मेहरजी राणा

### मजहर की घोषणा ( 1579)

अकबर ने समस्त धार्मिक मामलों को अपने नियंत्रण में करने हेतु 1579 ई. में मजहर की घोषणा की। इसने उसे धार्मिक मामले में सर्वोच्च बना दिया। अकबर द्वारा घोषित मजहरनामे पर पांच उलेमाओं के हस्ताक्षर थे। इसे घोषित करने के बाद अकबर ने सुल्तान-ए-आदिल की उपाधि धारण की। इस दस्तावेज में अकबर को ' अमीर-उल-मोमिनीन' कहा गया। मजहरनामा का प्रारूप शेख मुबारक ने तैयार किया था, जबकि इसे जारी करने की प्रेरणा शेख मुबारक तथा उसके दोनों पुत्रों— अबुल फजल तथा फैजी द्वारा दी गई थी।

अकबर का यह विश्वास था कि सभी धर्मों में सत्य के तत्व विद्यमान हैं लेकिन अन्ध अनुकरण की प्रवृत्ति उसे धुंधला बना देता है। इसलिए अकबर किसी भी धर्म के कट्टर सिद्धांतों से नहीं जुड़ा, जबकि सभी धर्मों के साथ आदर-भाव रखने में उसे कोई परेशानी नहीं थी। अकबर ने गोहत्या बंद करवा दी। वह दशहरा भी मनाता था और पारसी त्योहार नवरोज भी।

### दीन-ए-इलाही (तौहीद-ए-इलाही)

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### जहांगीर (1605–1627)

इनका वास्तविक नाम सलीम था। सलीम का जन्म 1569 में फतेहपुर सिकरी में शेख सलीम चिस्ती की दरगाह पर हुआ इनकी माता कछवाहा वंश की राजकुमारी हरखाबाई थी जिन्हें मरियम उज्जमानी के नाम से जाना जाता था।

राजकुमारी मनभावती (शाह बेगम) बेगम जहांगीर की पहली पत्नी थी। यह आमेर के राज भगवानदास की पुत्री थी इसका विवाह जहांगीर के साथ हिन्दू मुस्लिम रीति रिवाज के साथ हुआ था उस समय जहांगीर 15 वर्ष का था विवाह 13 मई 1585 को हुआ था खुसरो मनभावती बेगम का पुत्र था।

#### नूरजहाँ

मेहरुन्निसा बेगम जहांगीर की दूसरी पत्नी थी। सत्रह वर्ष की अवस्था में मेहरुन्निसा का विवाह 'अलीकुली' नामक एक साहसी ईरानी नवयुवक से हुआ था, जिसे जहांगीर के राज्य काल के प्रारम्भ में शेर अफगान की उपाधि और बर्दवान की जागीर दी गई थी। 1607 ई. में जहांगीर के दूतों ने शेर अफगान को एक युद्ध में मार डाला। मेहरुन्निसा को पकड़ कर दिल्ली लाया गया और उसे बादशाह के शाही हरम में भेज दिया गया। यहाँ वह बादशाह अकबर की विधवा रानी 'रुकईयाबेगम' की परिचारिका बनी। मेहरुन्निसा को जहांगीर ने सर्वप्रथम नौरोज़ त्यौहार के अवसर पर देखा और उसके सौन्दर्य पर मुग्ध होकर जहांगीर ने मई, 1611 ई. में उससे विवाह कर लिया। विवाह के पश्चात् जहांगीर ने उसे 'नूरमहल' एवं 'नूरजहाँ' की उपाधि प्रदान की। 1613 ई. में नूरजहाँ को 'पट्टमहिषी' या 'बादशाह बेगम' बनाया गया।

असाधारण सुन्दरी होने के अतिरिक्त नूरजहाँ बुद्धिमती, शील और विवेकसम्पन्न भी थी। उसकी साहित्य, कविता और ललित कलाओं में विशेष रुचि थी। इन समस्त गुणों के कारण उसने अपने पति पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। इसके फलस्वरूप जहांगीर के शासन का समस्त भार उसी पर आ पड़ा था। सिक्कों पर भी उसका नाम खोदा जाने लगा और वह महल में ही दरबार करने लगी। उसने अपने संबंधियों को उच्च पदवियां प्रदान की। उसके पिता का नाम मिरजा ग्यास वेग था। जिन्हें एतमाद उद् दौला की उपाधि देकर वजीर के रूप में नियुक्ति किया। उसका भाई मिर्जा अबुल हसन जफर बेग जिसे आसफखान की उपाधि दी गई। अर्जुमंदबानो बेगम आसफ खान की पुत्री थी जिसे बाद में मुमताज महल कहा जाने लगा। जिसकी शादी जहांगीर के पुत्र खुर्रम उर्फ शाहजहाँ से हुई।

उसने पहले पति से उत्पन्न अपनी पुत्री का विवाह जहांगीर के सबसे छोटे पुत्र शहरयार से कर दिया और क्योंकि उसकी जहांगीर से कोई संतान नहीं थी, अतः वह शहरयार को ही जहांगीर के उपरांत राज सिंहासन पर बैठाना चाहती थी। नूरजहाँ के ये सभी कार्य उसकी कूटनीति का ही एक हिस्सा थे।

जगत गोसाई जहांगीर की तीसरी पत्नी थी। जगत गोसाई या राजकुमारी मानवती बाईजी या राजकुमारी मनमती या मनभावती बाई जोधपुर की मारवाड़ रियासत की राजकुमारी थी, जो मुगल बादशाह जहांगीर की पत्नी और पाँचवें मुगल बादशाह शाहजहाँ की माँ के तौर पर जानी जाती हैं। उनकी मृत्यु के बाद उन्हें बिलकिस मकानी के नाम से सम्मानित किया गया था। मकानी बेगम शहज़ादा खुर्रम की माँ थीं जो मुगल शहंशाह शाहजहाँ के रूप में मयूर सिंहासन पर आसीन हुआ।



## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

सबसे पहले शाह सूजा ने स्वयं को बंगाल का बादशाह घोषित कर दिया मुराद ने स्वयं को गुजरात का बादशाह घोषित कर दिया। औरंगजेब इस समय दक्षिण भारत में था। वह वहां से आगरा आया।

उसने अहमदनगर की निजामशाही वंश को नियंत्रित किया। उसने अपनी सेना बल्ख भेजी परंतु इसमें उसे सफलता नहीं मिली। उसने दिल्ली में लालकिला और जामामस्जिद का निर्माण करवाया। शाहजहां को उसके पुत्र औरंगजेब द्वारा उसको आगरा के किले में बंदी बना लिया। जहां उसकी 1666 में मृत्यु हो गई। उसे ताजमहल में दफनाया गया। उसके शासनकाल में औरंगजेब को दक्षिण का गवर्नर (नवाब) बनाया गया था।

औरंगजेब ने अपने भाईयों को उत्तराधिकार के युद्ध में निम्नलिखित युद्धों में हराया।

1. बहादुरपुर का युद्ध – दारा व शाहशूजा
2. धरमत का युद्ध (इंदौर के दीपालपुर तहसील में) दारा, मुराद व औरंगजेब
3. सामूगढ़ का युद्ध (आगरा दारा-मुराद-औरंगजेब)
4. खजुआ का युद्ध (खजुआ इलाहाबाद औरंगजेब-शाहशूजा)
5. देवराय का युद्ध- औरंगजेब और दारा

### दारा शिकोह

दारा शिकोह शाहजहां का सबसे बड़ा पुत्र था। उसे पंजाब की सुबेदारी मिली थी शाहजहां ने उसे शाहबुलंद इकबाल की उपाधि दी थी। दारा अपनी साम्प्रदायिक उदारता के लिए जाना जाता है। दारा ने वेदों एवं बाइबिल का अध्ययन किया। दारा ने फारसी भाषा में मज्म-उल-बहरीन (दो समुद्रों का संगम) नामक पुस्तक की रचना की। जिसमें उसने हिन्दु और मुस्लिम धर्म को एक ही ईश्वर की प्राप्ति के दो मार्ग बताये। उसने सिर-ए-अकबर के नाम से 52 उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद किया। देवराय के युद्ध में 1659 में दाराशिकोह को औरंगजेब द्वारा बंदी बनाकर मृत्युदंड दे दिया और उसे दिल्ली के हुमायु के मकबरे में दफना दिया गया।

### औरंगजेब

औरंगजेब का जन्म 3 नवम्बर 1618 को झाबुआ के निकट दोहद (दाहौद), गुजरात में हुआ। सामुगढ़ की विजय के बाद औरंगजेब ने 31 जुलाई 1658 को दिल्ली में अपना पहला राज्याभिषेक करवाया उसने अबुल मुजफ्फर आलमगीर पादशाह गाजी की उपाधि धारण की। देवराई के युद्ध के बाद 15 जून 1659 को औरंगजेब ने अपना दूसरा राज्याभिषेक करवाया।

छत्रपति शिवाजी महाराज या शिवाजी राजे भोसले (1630-1680) भारत के राजा एवं रणनीतिकार थे जिन्होंने 1674 में पश्चिम भारत में मराठा साम्राज्य की नींव रखी। उन्होंने कई वर्ष औरंगजेब के मुगल साम्राज्य से संघर्ष किया।

गुरु तेग बहादुर सिखों के नवें गुरु थे, उन्होंने काश्मीरी पण्डितों तथा अन्य हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाने का विरोध किया। इस्लाम स्वीकार न करने के कारण 1675 में मुगल शासक औरंगजेब ने उन्हें इस्लाम कबूल करने को कहा कि पर गुरु साहब ने कहा सीस कटा सकते हैं केश नहीं। 11 नवंबर, 1675 ई को दिल्ली के चांदनी चौक में काजी ने फतवा पढ़ा और जल्लाद जलालदीन ने तलवार करके गुरु साहिब का शीश धड़ से अलग कर दिया। गुरुद्वारा शीश गंज साहिब तथा गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब उन स्थानों का स्मरण दिलाते हैं जहाँ गुरुजी की हत्या की गयी तथा जहाँ उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

**2. सरकार या जिले** – प्रत्येक सूबा कई सरकारों में बटा होता था। मुगल काल में जिले को सरकार भी कहते थे। फौजदार सरकार का प्रशासनिक मुखिया होता था तथा अमालगुजार सरकार का राजस्व प्रमुख होता था। सरकार परगनों में बंटे हुये होते थे। सिकदार परगनों का प्रशासनिक मुखिया होता था तथा अमीन तथा कानूनगो राजस्व अधिकारी होते थे।

**3. ग्राम** – ग्राम का मुखिया मुकदम होता था तथा पटवारी गाँव का लेखाधिकारी होता था। पटवारी को ही भू-दस्तावेजों तथा भू-राजस्व का लेखा रखना होता था। मुगलों ने ग्राम प्रशासन में विशेष दखल नहीं दिया। वस्तुतः सल्तनत काल से ही केन्द्रीय करण की जो प्रक्रिया चल रही थी। उसके अंतर्गत स्थानीय भू-स्वामियों के अधिकारों को सीमित करने के प्रयास होते रहते थे।

### मनसबदारी

“मनसब” फारसी भाषा का शब्द है। इस शब्द का अर्थ है पद, दर्जा या ओहदा। मनसब प्राप्त व्यक्ति मनसबदार कहा जाता था। अकबर ने अपने प्रत्येक सैनिक और असैनिक अधिकारी को कोई-न-कोई मनसब (पद) अवश्य दिया। इन पदों को उसने जात या सवार नामक दो भागों में विभाजित किया। जात का अर्थ है व्यक्तिगत पद या ओहदा और सवार का अर्थ घुड़सवारों की उस निश्चित संख्या से है जिसे किसी मनसबदार को अपने अधिकार में रखने का अधिकार होता था। इस तरह मनसब शब्द केवल सैनिक व्यवस्था का ही शब्द नहीं अपितु इसका अर्थ है वह पद जिसपर सैनिक और गैर-सैनिक अधिकारी को नियुक्त किया जाता या रखा जाता था।

सम्राट् अकबर सेना के महत्त्व को भली-भाँति जानता था। उसे पता था कि एक स्थायी और शक्तिशाली सेना के अभाव में न तो शांति स्थापित की जा सकती है और न ही साम्राज्य की रक्षा और विस्तार किया जा सकता है। अकबर से पूर्व जागीदारी प्रथा के आधार पर सेना एकत्र करने की प्रथा प्रचलित थी। उसने देखा कि जागीरदार निश्चित संख्या में न घोड़े रखते हैं और न ही घुड़सवार या सैनिक रखते हैं। इसके विपरीत वे सरकारी धन को अपनी विलासता पर खर्च कर लेते थे। अकबर ने जागीरदारी प्रथा के स्थान पर मनसबदारी प्रथा के आधार पर सेना को संगठित किया।

मनसबदारी सेना को संगठित करने की ऐसी व्यवस्था थी जिसमें प्रत्येक मनसबदार अपनी-अपनी श्रेणी और पद (मनसब) के अनुसार घुड़सवार सैनिक रखता था। इस व्यवस्था में मनसबदार सम्राट से प्रति माह नकद वेतन प्राप्त करता था।

अकबर ने जात और सवार मनसबदारों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया था

1. जिस व्यक्ति को जितना अधिक ऊँचा जात (व्यक्तिगत) मनसब दिया जाता था, वह उतने ही अधिक घुड़सवार रखने का अधिकारी भी होता था और उसे प्रथम श्रेणी का मनसब कहा जाता था। अकबर के काल में सबसे छोटा या निम्न मनसब (पद) दस सिपाहियों के ऊपर अधिकार रखने का था और उच्चतम दस हजार घुड़सवारों पर अधिकार रखने का था। बाद में अकबर ने उच्चतम मनसब की सीमा बढ़ाकर 12 हजार कर दी थी।
2. जो मनसबदार अपने जात (व्यक्तिगत) से आधी संख्या या आधे से अधिक घुड़सवार रख सकता था, वह दूसरी श्रेणी का मनसबदार होता था।
3. जिस मनसबदार को अपने जात (व्यक्तिगत पद) से आधे से कम घुड़सवार रखने का अधिकार था, उसे तीसरी श्रेणी का मनसबदार कहा जाता था।

सभी मनसबदारों को एक घुड़सवार के लिए दो घोड़े रखने अनिवार्य होते थे। किसी भी मनसबदार को जात पद के अनुसार ही सवार रखने की अनुमति थी।

मुगल मनसबदारों को प्रायः नकद में वेतन दिया जाता था। परन्तु कभी-कभी जागीर का राजस्व भी वेतन के स्थान पर दे दिया जाता था। उन्हें अपनी व्यक्तिगत आय और वेतन से ही अपने स्वयं के अधीन घुड़सवारों और घोड़ों का खर्च चलाना होता था। प्रथम श्रेणी के पंचहजारी मनसबदार को 30,000 रुपये प्रतिमास, द्वितीय श्रेणी के पंचहजारी को 29,000 रुपये प्रति मास और तृतीय श्रेणी के पंचहजारी

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

1. आगरा का किला, इलाहाबाद का फतेहपुर सीकरी तथा बुलंद दरवाजा, फतेहपुर सिकरी गुजरात विजय के पश्चात्	महान अकबर
2. दीनपनाह नगर	हुमायूँ
3. मोती मस्जिद (लाहौर), शहादरा में मकबरा (लाहौर)	जहांगीर
4. ताजमहल, लालकिला (दिल्ली का), जामा मस्जिद, मोती मस्जिद (आगरा-संगमरमर) का बना एकमात्र मस्जिद, दीवाने खास तथा दीवाने आम (दिल्ली)	शाहजहां
5. मोती मस्जिद लाल किले में, बीबी का मकबरा (औरंगाबाद), बादशाही मस्जिद (लाहौर)	औरंगजेब

### मुगल शासकों द्वारा दी गई उपाधियाँ

जगतगुरु	हरविजय सूरी	जैन धर्म के संत	अकबर
जरीकलम	मुहम्मद हुसैन	साहित्यकार	अकबर
सीरीकलम	अब्द उस समद	साहित्य	अकबर
राजकवि	फैजी	साहित्य	अकबर
कविप्रिय	बीरबल	साहित्य	अकबर
नादिर उल असरा	उस्ताद मंसूर	चित्रकारी	जहांगीर
नादिर उल जमान	अब्दुल हसन	चित्रकारी	जहांगीर
गुणसमुद्र	लाल खान	संगीत	शाहजहां
राजकवि	कलीम	साहित्य	शाहजहां
महाकवि	सुन्दरदास	साहित्य	शाहजहां

### मुगलकालीन पुस्तकें

तुजक-ए-बाबरी	बाबर
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम
अकबरनामा	अबुल फजल
तुजुक-ए-जहांगीरी	जहांगीर
आलमगीरनामा	मुंशी मिर्जा मुहम्मद काजीम
आइन-ए-अकबरी	अबुल फजल
मुन्तखाब उल लुबाब	खाफी खान
पादशाहनामा	मोहम्मद अमीनाई कजवीनी
पादशाहनामा	अब्दुल हमीद लाहौरी
नामा-ए-आलमगीरी	अकीर खान जफर (औरंगजेब का इतिहास)
सीरी-ए-अकबर	दाराशिकोह (उपनिषद् का उर्दू में अनुवाद)
अस्मत-उल-अरिफीन	दाराशिकोह (धार्मिक विचार)
मजमा-उल-बहरीन	दाराशिकोह (दार्शनिक विचार)
रक्तात-ए-आलमगीरी	औरंगजेब के द्वारा
अनवर-ए-साहिली पंचतंत्र का अनुवाद	अबुल फजल

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### उत्तरवर्ती मुगल

**1. बहादुर शाह प्रथम (1707–1712 ई.)** – यह 65 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा इसका वास्तविक नाम शाह मुअज्जम था। इसे शाह-ए-बेखबर के नाम से भी जाना जाता था। इसने शाहजी महाराज जो कि शिवाजी के पौत्र थे को मुगल कैद से मुक्त कर दिया। इसने गुरु गोविन्द सिंह के साथ संधि करके मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने की कोशिश की लेकिन गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के बाद बंदा बहादुर नामक सिक्ख नेता ने पंजाब में मुसलमानों के खिलाफ एक व्यापक अभियान छेड़ दिया। जिससे बहादुर शाह को सिक्खों के विरुद्ध कड़े निर्णय लेने पड़े। बहादुर शाह की लचर नीतियों के कारण शाही खजाना नष्ट हो गया। 1712 में बहादुर शाह की मृत्यु हो गयी। इसने जजिया कर समाप्त कर दिया। बहादुर शाह के चार पुत्र थे 1. जहाँदारशाह 2. अजीम-उस-शान 3. रफी-उस-शान 4. जहानशाह। बहादुर शाह की मृत्यु के बाद इनके पुत्रों में उत्तराधिकार के लिये जंग छिड़ गया, जिसमें जहाँदारशाह विजयी रहा। बहादुर शाह के दरबार में 1711 ई. में एक डच प्रतिनिधि शिष्टमण्डल जोशुआ कटेलार के नेतृत्व में भारत आया।

**2. जहाँदार शाह (1712–13 ई.)** – शाहआलम प्रथम की मृत्यु के पश्चात् जहाँदार शाह अपने तीन भाईयों की हत्या करके गद्दी पर बैठा। इसको शासक बनने में जुल्फिकार खाँ ने मदद की। जहाँदार शाह ने आमेर के राजा जयसिंह को मिर्जा की उपाधि दी। जहाँदारशाह को लोग लम्पट मुख भी कहते हैं। सैयद बंधुओं के द्वारा 1713 ईस्वी में इसकी हत्या कर दी गई। अब्दुल्ला खान व हुसैन अली को सैयद बंधु व किंगमेकर भी कहा जाता था। उन्होंने फरुखसियर के समर्थन में जहाँदार शाह की हत्या कर दी। सैयद बंधुओं को बारा भी कहा जाता था क्योंकि उन्हें बारह गाँव का एक समूह मिला हुआ था।

### 3. फरुख सियर (1713–1719 ई.)

यह जहाँदारशाह का भतीजा तथा अजीम उस शान का पुत्र था। यह सैयद बंधुओं की मदद से गद्दी पर बैठा। इसने सैयद बंधुओं में से एक अब्दुला खाँ को अपना वजीर बनाया तथा उसे कुतुब उल मुल्क की उपाधि दी एवं हुसैन अली को मीर बक्शी का पद दिया और अमीर-उर-उमरा की उपाधि दी। उसने 1717 में ईस्ट इंडिया कंपनी को कई व्यापारिक अधिकार प्रदान किये। फरुखसियर ने आमेर के राजा जय सिंह को सवाई की उपाधि दी। उसने चिन किलिच खान को दक्षिण का गवर्नर नियुक्त किया और उन्हे निजाम-उल-मुल्क की उपाधि दी।

सैयद बंधुओं ने फरुख सियर से तंग आकर मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ के साथ 1719 में दिल्ली की संधि की। जिसमें मराठों ने मुगलों को सैन्य सहायता देने का वचन दिया। इसके बदले में उन्हें ढेर सारी रियायते दी गई।

मराठों की सहायता से सैयद बंधुओं ने फरुख सियर को गद्दी से हटाकर अंधा बना दिया और बाद में उसकी मृत्यु कर दी गई फरुखसियर को घृणित कायर भी कहा गया। फरुख सियर की मृत्यु के बाद सैयद बंधुओं ने रफी-उद्-दरजात (फरवरी 1719 – जून 1719) तथा रफी-उद्-दौला (जून 1719 – सितम्बर 1719) को शासक बनाया।

### ईस्ट इंडिया कंपनी का मैग्ना कार्टा

1715 ई. में एक शिष्टमंडल जॉन सुरमन की नेतृत्व में भारत आया। यह शिष्टमंडल उत्तरवर्ती मुगल शासक फरुख सियर की दरबार में 1717 ई. में पहुँचा। उस समय फरुख सियर जानलेवा घाव से पीड़ित था। इस शिष्टमंडल में हैमिल्टन नामक डॉक्टर थे जिन्होंने फरुखसियर का इलाज किया था। इससे फरुख सियर खुश हुआ तथा अंग्रेजों को भारत में कहीं भी व्यापार करने की अनुमति तथा अंग्रेजों द्वारा बनाए गए सिक्के को भारत में सभी जगह मान्यता प्रदान कर दिया गया। फरुख सियर द्वारा जारी किये गए इस घोषणा को ईस्ट इंडिया कंपनी का मैग्ना कार्टा कहा जाता है। मैग्ना कार्टा का सर्वप्रथम 1215 ई. में ब्रिटेन में जॉन-II के द्वारा हुआ था।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

इसी के समय में बक्सर के युद्ध 1764 में यह बंगाल के नबाव मीर कासिम तथा अवध के नबाव सुजाउद्दौला के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी से पराजित हुआ। बक्सर के युद्ध के बाद शाह आलम को ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ 1765 ई. में इलाहाबाद की संधि करनी पड़ी।

1772 ई. में मराठा सरदार महाद जी सिंधिया ने शाह आलम द्वितीय को पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठा दिया परन्तु 1803 में अंग्रेजों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

रुहेला सरदार गुलाम कादिर ने शाह आलम द्वितीय को अंधा बना दिया तथा 1806 में शाह आलम द्वितीय की हत्या कर दी गई।

### पानीपत का तृतीय युद्ध

पानीपत का तृतीय युद्ध अहमद शाह अब्दाली और मराठों के बीच हुआ। पानीपत की तीसरी लड़ाई मराठा साम्राज्य (सदाशिव राव भाउ) और अफगानिस्तान के अहमद शाह अब्दाली, जिसे अहमद शाह दुर्रानी भी कहा जाता है के बीच 14 जनवरी 1961 को वर्तमान हरियाणा में स्थित पानीपत के मैदान में हुआ। इस युद्ध में दोआब के अफगान रोहिला और अवध के नवाब सुजाउद्दौला ने अहमद शाह अब्दाली का साथ दिया।

गुजरात और मालवा के बाद बाजी राव ने 1737 में मुगलों को हराकर दिल्ली को अपने अधीन कर लिया था। बाजी राव के पुत्र बाला जी बाजी राव ने बाद में पंजाब को भी जीतकर अपने अधीन करके मराठाओं की विजय पताका उत्तर भारत में फैला दी थी। पंजाब विजय ने 1758 में अफगानिस्तान के दुर्रानी शासकों से टकराव को अनिवार्य कर दिया था। 1759 में दुर्रानी शासक अहमद शाह अब्दाली ने कुछ पश्तून कबीलों के सरदारों और भारत में अवध के नवाबों से मिलकर गंगा के दोआब क्षेत्र में मराठाओं से युद्ध के लिए सेना एकत्रित की। इसमें रोहिला अफगान ने भी उसकी सहायता की। इस तरह पानीपत का तीसरा युद्ध सम्मिलित इस्लामिक सेना और मराठों के बीच लड़ा गया। अवध के नवाब ने इसे इस्लामिक सेना का नाम दिया और बाकी मुसलमानों को भी इस्लाम के नाम पर इकट्ठा किया। जबकि मराठा सेना ने अन्य हिन्दू राजाओं से सहायता की उम्मीद की थी (राजपूतों और जाटों) जो कि उन्हें न मिल सकी। इस युद्ध में इस्लामिक सेना में 6000 – 100000 सैनिक और मराठाओं के ओर से 450000 – 60000 सैनिकों ने भाग लिया।

14 जनवरी 1761 को हुए इस युद्ध में मराठों को हार का मुख देखना पड़ा। इस युद्ध में दोनों पक्षों की हानियों के बारे में इतिहासकारों में भारी मतभेद है, फिर भी ये माना जाता है कि इस युद्ध में 1,20,000 लोगों ने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया था जिसमें

### 8. अकबर द्वितीय (1806–1837 ई.)

शाह आलम द्वितीय की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र अकबर द्वितीय मुगल बादशाह बना। इनका जन्म मध्यप्रदेश के सतना जिले के मुकुन्दपुर में हुआ था। अकबर द्वितीय अंग्रेजों के संरक्षण में पेंशनर बनने वाला प्रथम मुगल बादशाह था। इसने महान समाज सुधारक राममोहन राय को राजा की उपाधि प्रदान की तथा उन्हें दूत बनाकर ब्रिटिश सम्राट के दरबार में भेजा जहाँ 1833 में उनकी मृत्यु हो गई।

### 9. बहादुरशाह द्वितीय (बहादुरशाह जफर) (1837–1862 ई.)

1837 में अकबर द्वितीय की मृत्यु के पश्चात बहादुर शाह जफर शासक बना। यह अंतिम मुगल शासक था। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में इसे शहंशाह-ए-हिन्दुस्तान घोषित किया गया। युद्ध में विद्रोहियों का साथ देने के कारण अंग्रेज सरकार ने इसे गिरफ्तार कर रंगून भेज दिया जहाँ 1862 में इसकी मृत्यु हो गयी। बहादुर शाह द्वितीय जफर के नाम से कविता और शायरियां लिखा करते थे। जिस कारण से उन्हें जफर की उपाधि से विभूषित किया गया।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

1668 में शिवाजी ने मुगलों के साथ दूसरी बार सन्धि की। औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की मान्यता दी। शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को 5000 की मनसबदारी मिली और शिवाजी को पूना, चाकन और सूपा का जिला लौटा दिया गया। पर, सिंहगढ़ और पुरन्दर पर मुगलों का अधिपत्य बना रहा। सन् 1670 में सूरत नगर को दूसरी बार शिवाजी ने लूटा।

सन् 1674 तक शिवाजी ने उन सारे प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था जो पुरन्दर की सन्धि के अन्तर्गत उन्हें मुगलों को देने पड़े थे। पश्चिमी महाराष्ट्र में स्वतंत्र हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के बाद शिवाजी ने अपना राज्याभिषेक करना चाहा, पर उनके राज्याभिषेक के 12 दिन बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया था इस कारण से 4 अक्टूबर 1674 को दूसरी बार शिवाजी ने छत्रपति की उपाधि ग्रहण की। विजयनगर के पतन के बाद दक्षिण में यह पहला हिन्दू साम्राज्य था। एक स्वतंत्र शासक की तरह उन्होंने अपने नाम का सिक्का चलवाया। 3 अप्रैल, 1680 को शिवाजी का देहान्त हो गया।

जहर दिलाने के बाद शिवाजी महाराज की मृत्यु 3 अप्रैल 1680 में हुई। उस समय शिवाजी के उत्तराधिकार संभाजी को मिले। शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र संभाजी थे और दूसरी पत्नी से राजाराम नाम एक दूसरा पुत्र था। उस समय राजाराम की उम्र मात्र 10 वर्ष थी अतः मराठों ने शम्भाजी को राजा मान लिया। औरंगजेब के पुत्र शहजादा अकबर ने औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह कर दिया। संभाजी ने उसको अपने यहाँ शरण दी। औरंगजेब अन्ततः 1689 में संभाजी को मुकरव खाँ द्वारा बन्दी बना लिया। औरंगजेब ने राजा संभाजी से बदसलूकी की और बुरा हाल कर के मार दिया।

सन 1689 में शम्भाजी की हत्या के बाद राजाराम को पुनः शासक घोषित किया गया क्योंकि शम्भाजी का पुत्र शाहूजी अल्पव्यस्क था। राजाराम ने स्वयं को शाहू का प्रतिनिधित्व माना। राजाराम ने सुरक्षा की दृष्टि से अपनी राजधानी जिंजी बनाया। मुगलों ने रायगढ़ पर कब्जा करके शाहूजी और उनकी माता एशुबाई को बन्दी बना लिया। राजाराम ने अष्टप्रधान में एक नये पद प्रतिनिधी का सृजन किया। 1700 ईस्वी में राजाराम की मृत्यु हो गई। उसके बाद राजाराम की पत्नी ताराबाई 4 वर्षीय पुत्र शिवाजी द्वितीय की संरक्षिका बनकर राज करती रही। 1707 में औरंगजेब की मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के बाद बहादुर शाह प्रथम ने शाहूजी को बन्दी जीवन से मुक्त कर दिया। शाहूजी ने मराठा साम्राज्य पर अपना दावा प्रस्तुत किया।

1707 ई. में शाहूजी ने खेड़ा के युद्ध में ताराबाई को पराजित किया। 1708 ई. में सतारा में शाहूजी का राज्याभिषेक हुआ। सन 1708 ई. में ही बालाजी विश्वनाथ शाहूजी के सेनापति बनाये गये। उनके बेहतर प्रबंधन के कारण सन 1713 ई. में उन्हें पेशवा बना दिया गया। उनके नेतृत्व में पेशवा का पद आसमान की उंचाईयों पर पहुँच गया और छत्रपति का महत्व धीरे धीरे समाप्त होता गया। सन 1750 ई. में संगोला की संधि के बाद पेशवा मराठा संघ का वास्तविक प्रधान बन गया।

### पेशवा शक्ति का उदय

1. बालाजी विश्व नाथ — इन्हें शाहूजी ने सन 1713 ई. में अपना पेशवा नियुक्त किया। इन्हें मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक माना जाता है ये कोंकण के चित्पावन ब्राह्मण थे। सन 1719 में मुगल बादशाह रफी-उद्-दरजात ने छत्रपति शाहूजी से संधि की। इस संधि के अनुसार मराठा सम्राट ने शाहू को महाराष्ट्र का स्वामी मान लिया। इसके बदले में मराठों को प्रतिवर्ष दस लाख रूपयें देना पड़ता था। इस संधि को मराठों का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
2. बाजीराव प्रथम — बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद उनके पुत्र बाजीराव प्रथम को पेशवा बनाया गया। बाजीराव सर्वशक्तिशाली मराठा पेशवा हुए इन्होंने मराठा शक्ति का विस्तार किया। इनके काल में मराठा साम्राज्य अपने उत्कर्ष चरम पर पहुँच गया। इनके उपर बाजीराव मस्तानी नामक फिल्म भी निर्मित की गई है।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

1. वरगीर – वरगीर वे घुड़सवार सैनिक थे जिन्हें राज्य की ओर से घोड़े और शस्त्र दिये जाते थे। ये शाही घुड़सवार होते थे।
2. सिलेदार – ये स्वतंत्र सैनिक थे ये अपने अस्त्र शस्त्र स्वयं रखते थे।

### सैन्य संगठन

25 घुड़सवार एक हवालदार के अधीन होते थे। 5 हवालदार एक जुमलादार के अधीन होते थे। 10 जुमलादार 1 हजार के अधीन होते थे। 5 हजार एक पंच हजार के अधीन होते थे। शिवाजी की सेना में मुस्लिमों का भी प्रतिनिधित्व रहता था। स्त्रियों को युद्ध में प्रवेश करना वर्जित था।

### सिख धर्म

सिख धर्म के लोग गुरुनानक देव के अनुयायी हैं। वे सभी धर्मों में निहित आधारभूत सत्य में विश्वास रखते हैं और उनका दृष्टिकोण धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक पक्षपात से रहित और उदार है। 1538 ई. में गुरु नानक की मृत्यु के बाद सिखों का मुखिया गुरु कहलाने लगा। सिख धर्म का इतिहास बलिदानों का इतिहास है।

### गुरुनानक देव (1469–1539)

सिख धर्म के प्रवर्तक गुरुनानक देव का जन्म 15 अप्रैल, 1469 में 'तलवंडी' नामक स्थान पर हुआ था। नानक जी के पिता का नाम कल्याणचंद या मेहता कालू जी और माता का नाम तृप्ता था। नानक जी के जन्म के बाद तलवंडी का नाम ननकाना पड़ा। वर्तमान में यह जगह पाकिस्तान में है। उनका विवाह नानक सुलक्खनी के साथ हुआ था। इनके दो पुत्र श्रीचन्द और लक्ष्मीचन्द थे। उन्होंने करतारपुर नामक एक नगर बसाया, जो अब पाकिस्तान में है। इसी स्थान पर सन् 1539 को गुरु नानक जी का देहांत हुआ था। गुरु नानक की पहली 'उदासी' (विचरण यात्रा) 1507 ई. में 1515 ई. तक रही। इस यात्रा में उन्होंने हरिद्वार, अयोध्या, प्रयाग, काशी, गया, पटना, असम, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, सोमनाथ, द्वारका, नर्मदातट, बीकानेर, पुष्कर तीर्थ, दिल्ली, पानीपत, कुरुक्षेत्र, मुल्तान, लाहौर आदि स्थानों में भ्रमण किया।

### करतारपुर कॉरीडोर

करतारपुर साहिब सिखों के लिए सबसे पवित्र जगहों में से एक है। करतारपुर साहिब सिखों के प्रथम गुरु, गुरुनानक देव जी का निवास स्थान था। गुरु नानक ने अपनी जिंदगी के आखिरी 17 साल 5 महीने 9 दिन यहीं गुजारे थे और उनका देहांत भी यहीं पर हुआ था। बाद में उनकी याद में यहां पर एक गुरुद्वारा बनाया गया। इसे ही दरबारपुर साहिब के नाम से जाना जाता है। यह पाकिस्तान के नारोवाल जिले में है जो पंजाब में आता है। यह जगह लाहौर से 120 किलोमीटर दूर है। इतिहास के अनुसार गुरुनानक देव की तरफ से भाई लहणा जी को गुरु गद्दी भी इसी स्थान पर सौंपी गई थी। जिन्हें दूसरे गुरु अंगद देव के नाम से जाना जाता है। यह गुरुद्वारा रावी नदी के पास है और डेरा साहिब रेलवे स्टेशन से इसकी दूरी चार किलोमीटर है। यह गुरुद्वारा भारत-पाकिस्तान सीमा से सिर्फ तीन किलोमीटर दूर है।

एक महत्वपूर्ण फैसले में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने गुरुदासपुर जिले के डेरा बाबा नानक से अंतरराष्ट्रीय सीमा तक करतारपुर गलियारे की इमारत और विकास को मंजूरी दे दी। केंद्र की मंजूरी के बाद गुरु नानक देव जी की 550वीं जयंती के मौके तक दिल्ली-करतारपुर रास्ते का निर्माण करवाया जाएगा। ये विकास कार्य पाकिस्तान से लगी सीमा तक करवाया जाएगा। केंद्र के इस फैसले से भारतीय तीर्थ यात्रियों को पाकिस्तान में रावी नदी के तट पर गुरुद्वारा करतारपुर साहिब जाने की सुविधा मिल सकेगी। इससे भारतीय तीर्थ यात्री पूरे साल पाकिस्तान में स्थित इस गुरुद्वारे की यात्रा कर सकेंगे।

## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

सेना इकट्ठी कर ली थी। इससे नाराज होकर जहांगीर ने उनको 12 साल तक कैद में रखा। रिहा होने के बाद उन्होंने शाहजहां के खिलाफ बगावत कर दी और 1628 ई. में अमृतसर के निकट संग्राम में शाही फौज को हरा दिया। सन् 1644 ई. में कीरतपुर, पंजाब में उनकी मृत्यु हो गई।

### हरराय (1645–1661)

गुरु हरराय का सिख के सातवें गुरु थे। उनका जन्म 16 जनवरी, 1630 ई. में पंजाब में हुआ था। गुरु हरराय जी सिख धर्म के छठे गुरु के पुत्र बाबा गुरदिता जी के छोटे बेटे थे। इनका विवाह किशन कौर जी के साथ हुआ था। उनके दो पुत्र गुरु रामराय जी और हरकिशन साहिब जी थे। गुरु हरराय ने मुगल शासक औरंगजेब के भाई दारा शिकोह की विद्रोह में मदद की थी। गुरु हरराय की मृत्यु सन् 1661 ई. में हुई थी।

### हरकिशन (1661–1664)

गुरु हरकिशन साहिब सिखों के आठवें गुरु हुए। उनका जन्म 7 जुलाई, 1656 को कीरतपुर साहेब में हुआ था। उन्हें बहुत छोटी उम्र में गद्दी प्राप्त हुई थी। इसका मुगल बादशाह औरंगजेब ने विरोध किया। इस मामले का फैसला करने के लिए औरंगजेब ने गुरु हरकिशन को दिल्ली बुलाया।

गुरु हरकिशन जब दिल्ली पहुंचे, तो वहां हैजे की महामारी फैली हुई थी। कई लोगों को स्वास्थ्य लाभ कराने के बाद उन्हें स्वयं चेचक निकल आई। 30 मार्च सन्, 1664 को मरते समय उनके मुंह से 'बाबा बकाले' शब्द निकले, जिसका अर्थ था कि उनका उत्तराधिकारी बकाला गांव में दूँडा जाए। साथ ही गुरु साहिब ने सभी लोगों को निर्देश दिया कि कोई भी उनकी मृत्यु पर रोयेगा नहीं।

### तेग बहादुर (1664–1675)

गुरु तेग बहादुर सिंह का जन्म 18 अप्रैल, 1621 को पंजाब के अमृतसर नगर में हुआ था। वह सिखों के नौवें गुरु थे। गुरु तेग बहादुर सिंह ने धर्म की रक्षा और धार्मिक स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया और सही अर्थों में 'हिन्द की चादर' कहलाए। उस समय मुगल शासक जबरन लोगों का धर्म परिवर्तन करवा रहे थे। इससे परेशान होकर कश्मीरी पंडित गुरु तेग बहादुर के पास आए और उन्हें बताया कि किस प्रकार इस्लाम को स्वीकार करने के लिए अत्याचार किया जा रहा है। इसके बाद उन्होंने पंडितों से कहा कि आप जाकर औरंगजेब से कह दें कि यदि गुरु तेग बहादुर ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया तो उनके बाद हम भी इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेंगे और यदि आप गुरु तेग बहादुर जी से इस्लाम धारण नहीं करवा पाए तो हम भी इस्लाम धर्म धारण नहीं करेंगे। औरंगजेब ने यह स्वीकार कर लिया।

वे औरंगजेब के दरबार में गए। औरंगजेब ने उन्हें तरह-तरह के लालच दिए, पर गुरु तेग बहादुर जी नहीं माने तो उन पर जुल्म किए गए, उन्हें कैद कर लिया गया, दो शिष्यों को मारकर गुरु तेग बहादुर जी को डराने की कोशिश की गई, पर वे नहीं माने। इसके बाद उसने दिल्ली के चांदनी चौक पर गुरु तेग बहादुर जी का शीश काटने का हुक्म जारी कर दिया और गुरु जी ने 24 नवंबर, 1675 को धर्म की रक्षा के लिए बलिदान दे दिया।

### गुरु गोविन्द सिंह (1675–1708)

गुरु गोविन्द सिंह सिखों के दसवें और अंतिम गुरु माने जाते हैं। उनका जन्म 22 दिसंबर, 1666 ई. को पटना में हुआ था। वह नौवें गुरु तेग बहादुर जी के पुत्र थे। उनको 9 वर्ष की उम्र में गुरुगद्दी मिली थी। गुरु गोविन्द सिंह के जन्म के समय देश पर मुगलों का शासन था। गुरु गोविन्द सिंह ने धर्म, संस्कृति व राष्ट्र की आन-बान और शान के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया था।



## Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

### भारत में पुर्तगालियों का आगमन

भारत में पुर्तगालियों का आगमन 1498 ई. में हुआ। जब पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा 20 मई 1498 में कालीकट स्थित "कप्पकडाबू" नामक बन्दरगाह पहुँचा। कालीकट जिसे कोझीकोड के नाम से भी जाना जाता है, उत्तरी केरल का जिला है। कालीकट अपने मसालों और रेशम के लिए जाना जाता था। यही कारण है कि इसने हिंद महासागर के कई देशों के साथ सफल व्यापारिक संबंध स्थापित किए। कई अफ्रीकी, एशियाई और मध्य पूर्व के देशों के साथ मजबूत व्यापारिक संबंधों ने कालीकट को उसके सुनहरे दिनों का एक प्रसिद्ध आर्थिक केंद्र बना दिया। कालीकट के तत्कालीन शासक "जमोरिन" ने उसका स्वागत किया। वास्कोडिगामा पुर्तगाल के शासक डॉन हेनरिक के प्रतिनिधि के रूप में भारत आया था। वास्कोडिगामा के आगमन से पुर्तगालियों और भारतीयों के मध्य व्यापार क्षेत्र में एक नये युग का शुभारम्भ हुआ। वह भारत से लौटते समय अपने साथ जो मसाले लेकर गया। उन मसालों को पुर्तगाल में बेचकर उसने 60 गुना मुनाफा कमाया। जिससे अन्य पुर्तगाली व्यापारियों को प्रोत्साहन मिला। धीरे धीरे पुर्तगालियों का भारत में आने का क्रम जारी हो गया।

9 मार्च 1500 ई. में एक और पुर्तगाली व्यापारी पेड्रो अल्वारेज कैब्राल 13 जहाजों का नायक बनकर भारत आया। उसका अरब व्यापारियों से कड़ा संघर्ष हुआ। अन्त में अरब व्यापारी पराजित हुए। अरबों को पराजित करने के बाद कैब्राल ने कोचीन तथा केन्नानोर के शासकों से मित्रता स्थापित की। 1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया। वास्कोडिगामा तीसरी बार भारत में 5 सितम्बर 1524 ई. में पुर्तगाली वाइसराय के रूप में आया। यहीं पर उसकी दिसम्बर 1524 ई. में मृत्यु हो गई। उसे कोचीन में दफनाया गया।

1503 में पुर्तगालियों ने कोचीन में अपनी प्रथम व्यापारिक कोठी स्थापित की तथा 1505 में कुन्नूर में दूसरी कोठी स्थापित की। अब पुर्तगालियों ने भारत तथा यूरोप के मध्य होने वाले व्यापार पर एकाधिकार करने के लिए एक नई नीति अपनाई। इस नीति के अंतर्गत व्यापारिक देख-रेख के लिए 3 वर्ष के लिए एक वाइसराय (गवर्नर) नियुक्त किया गया। इस प्रकार भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर या वाइसराय 1505 में फ्रांसिस्को-डी-अल्मेडा को नियुक्त किया गया। उसने सामुद्रिक नीति को अधिक महत्व दिया तथा हिन्द महासागर में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने का प्रयत्न किया। इसने "शान्त जल की नीति" को अपनाया। अल्मेडा ने भारत में राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। इस प्रयास में उसने 1505 में अंजाडीवा, कैन्नूर तथा किलवा में दुर्ग स्थापित किये। 1509 ई. में उसने गुजरात, तुर्की और मिस्र के संयुक्त नौ-सैनिक बेड़े की पराजित किया। इसके बाद वह पुर्तगाल वापस चला गया।

अल्मेडा के बाद 1509 ई. अलफांसो डी अलबुकर्क भारत में पुर्तगाली वाइसराय बनकर आया। (इससे पहले वह भारत में 1503 ई. में एक पुर्तगाली जहाजी बेड़े का नायक बनकर आया था।) वाइसराय के रूप में भारत आने के बाद उसने 1510 ई. में बीजापुर के शासक यूसुफ आदिल शाह से गोवा को छीनकर अपने अधिकार में कर लिया। 1511 ई. में अलबुकर्क ने मलक्का पर तथा 1515 में फारस की खाड़ी में स्थित होर्मुज बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया। उसके समय में पुर्तगालियों की जल सेना भारत में सबसे शक्तिशाली जल सेना थी। उसने भारत में पुर्तगालियों की आबादी बढ़ाने के उद्देश्य से भारतीय स्त्रियों से विवाह को प्रोत्साहन दिया। उसने अपने अधिकार क्षेत्र में सती प्रथा को बंद करवा दिया। भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक अलफांसो-डी-अलबुकर्क को माना जाता है।

अलफांसो डी अलबुकर्क के बाद योग्य पुर्तगाली गवर्नरों का अभाव रहा। 1529 ई. "निनो-डी-कुन्हा" गवर्नर बनकर आया। यह 1515 के बाद आये पुर्तगाली गवर्नरों में सबसे योग्य था। इसने 1534 में बेसीन तथा 1535 ई. दीव पर अधिकार कर लिया। इसके समय में पुर्तगाली शासन का मुख्य केन्द्र कोचीन के स्थान पर गोवा बन गया। कुन्हा 1538 ई. तक भारत में रहा। पुर्तगालियों ने चौल, मुंबई, सेंट टॉमस, मद्रास व हुगली में अपनी व्यापारिक कोठियाँ स्थापित की। 1559 में इन्होंने दमन पर भी अधिकार कर लिया। किन्तु ये अपने साम्राज्य की लम्बे समय तक रक्षा नहीं कर सके और शीघ्र ही पतन का शिकार हो गए।